॥ पूर्ण ब्रह्म परमात्माय नमः ॥

गौड़ विप्र पञ्चाङ्ग गोत्रावली

एक वृहद् सर्वोत्तम संकलन प्रथम बार प्रकाशित
सभी गौड़ विप्र बन्धुओं के लिए परमोपयोगी ग्रन्थ

सृष्टि रचियता ब्रह्माण्ड नायक ब्रह्मा जी

संकलनकर्त्ता

गोविन्द लाल गौड़ (सेवा निवृत)

(राजकीय एवं राष्ट्रीय पुरस्कृत)

प्रकाशिका :

माया देवी गौड़

२७६० पूर्बियों का चौंक, खजाने वालों का रास्ता, जयपुर

सहयोग राशि २५/-

Scanned with CamScanner

प्रकाशिका
माया देवी गौड़
२७६०, पूर्वियों का चौक,
खजाने वालों का रास्ता, जयपुर–३०२ ००१

✧

सर्वाधिकार सुरक्षित

✧

प्रथम संस्करण
विक्रम संवत् २०६१
(श्री गुरु पूर्णिमा)

✧

१००० प्रतियाँ

✧

सहयोग राशि
२५/– (पच्चीस रुपये मात्र)

इस पते पर भी गोत्रावली उपलब्ध :–
'शर्मा स्टेशनर्स'
समस्त लेखन सामग्री के थोक विक्रेता
राजा उदयसिंह जी की हवेली (छोटी चौपड़)
गोधों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर

Scanned with CamScanner

॥ परमब्रह्म गुरु देवाय नमः॥

गुरु वन्दना

गुरु ब्रह्मा गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

गौड़ विप्र पञ्चाङ्ग गोत्रावली

प्रस्तुत गोत्रावली में मुख्य पाँच अंगों का समावेश किया गया है–१. शासन, २. ऋषि गोत्र, ३. पद्वी, ४. प्रवर, ५. शाखा एवं ऋषि गोत्रों के अनुसार–१. सूत्र, २. वेद, ३. कुल देवी और ५. गणपति का नाम वर्णन किया गया है, जो सरल और अपूर्व संकलन है।

समर्पण

समस्त आदि गौड़ ब्राह्मण अथवा गौड़ ब्राह्मण व सनाढ्य ब्राह्मण के नाम से सम्बोधित होने वाले विप्र श्रेष्ठ जनों को परम श्रद्धापूर्वक प्रस्तुत संकलन 'गौड़ विप्र पञ्चाङ्ग-गोत्रावली' पुष्प के रूप में सादर समर्पित करते हुए परम सौभाग्य का अनुभव करता हूँ। संभव है अनभिज्ञता के कारण असंगति तथा त्रुटियाँ रहना स्वाभाविक है, आशा है विज्ञ विप्रजन क्षमा प्रदान कर समुचित मार्गदर्शन देकर कृतार्थ करेंगे।

संकलनकर्त्ता :
गोविन्दलाल गौड़ (सरकारी सेवानिवृत्त)
२७६०, पूर्वियों का चौक, खजाने वालों का रास्ता,
जयपुर (राजस्थान)

Scanned with CamScanner

सहायक संकलन ग्रन्थों का नाम :-

१. ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड - मुम्बई
२. जाति भास्कर - मुम्बई
३. श्री आदि गौड़ प्रदीपिका - हैदराबाद
४. ब्राह्मण पथ प्रदीप - अलवर
५. सर्व ब्राह्मण गोत्रावली - जयपुर
६. ब्राह्मण निर्णय - फुलेरा
७. ब्राह्मणोत्पत्ति - अलिगढ़
८. गंगाधरी सुगम विवाह पद्धति - रतनगढ़ (बीकानेर)
९. नित्य कर्म प्रयोगमाला - मुम्बई
१०. अल्ल गोत्र प्रवर पत्रावली - कोटा

आभार

मैं परम श्रद्धापूर्वक उन समस्त गुरुजनों के प्रति आभार एवं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिनके अथक् प्रयास से रचित ग्रन्थों के अध्ययन के आधार पर 'गौड़ विप्र पञ्चाङ्ग-गोत्रावली' का संकलन करना संभव हुआ है। साथ ही मैं उन महानुभावों का भी आभार एवं सम्मान व्यक्त करता हूँ जिनकी प्रेरणा व मार्गदर्शन में गोत्रावली का प्रकाशन संभव हुआ है।

श्रद्धेय मार्गदर्शक एवं शुभचिन्तक

१. पं. विशुद्धानन्दजी शास्त्री ब्रह्मर्षि, ब्राह्मण रत्न, गौड़ रत्न
ग्राम-आगर थानागाजी, अलवर

२. पं. छोटालाल जी भारद्वाज, सर्वहितैषी
३०५९, भारद्वाज सदन, कल्याणजी का रास्ता, जयपुर

३. पं. दुर्गाशंकर जी भावन
१५७७, भावन कुटीर, खेजड़ों का रास्ता, जयपुर

Scanned with CamScanner

भूमिका

मैं न विद्वान हूँ न मुझ में पाण्डित्य है। मैं ईश्वर की सृष्टि रचना में दैहिक रूप से तुच्छ मनुष्य हूँ। मनुष्य के गुणों का भी मुझ में अभाव है। पूर्व महर्षियों द्वारा मनुष्यों को गुण कर्मानुसार चार वर्णों में विभाजित किया गया था। तदानुसार सभी श्रेष्ठ गुण कर्म से युक्त मनुष्यों को ब्राह्मण वर्ण की उपाधि (संज्ञा) दिया गया था। इस मापदण्ड में भी मैं अपने आपको अपूर्ण मानता हूँ।

हजारों वर्षों के अन्तराल में पक्षपात या अनभिज्ञता के कारण, वर्णों को जाति का रूप दे दिया गया है, जबकि हम दैहिक रूप से मनुष्य जाति के प्राणी वर्ग में हैं।

उसी प्रथा के अनुसार मैं भी एक तुच्छ ब्राह्मण हूँ। इसी प्रकार मनुष्य अनेक जातियों में बंट गया है। पूर्व वर्ण व्यवस्था के अनुसार अनेक ऋषियों को ब्राह्मण वर्ण की प्रतिष्ठा प्राप्त हुई थी।

अतएव उन्हीं ऋषियों के वंश परम्परा में जन्म लेने के आधार पर, हम अपने को ब्राह्मण कह रहे हैं, वर्ण व्यवस्था के अनुसार नहीं।

उसी प्रथानुसार, 'गौड़ या आदि गौड़ ब्राह्मण' के नाम से सम्बोधित होने वाले विप्र बन्धुओं को अपने-अपने गोत्रानुसार-शासन, पदवी, प्रवर, शाखा, सूत्र, वेद, कुल देवी और कुल गणपति की सरल जानकारी प्राप्त होगी। फलस्वरूप विवाह आदि सम्बन्धों में वर-कन्या का चुनाव धर्म संगत किया जा सकेगा।

यद्यपि पूर्व में अनेक विद्वानों द्वारा श्रेष्ठ गोत्रावली प्रकाशित हो चुकी है, जिसके अध्ययन एवं विज्ञ जनों के मार्गदर्शन में यह वृहद् 'गोत्रावली'

Scanned with CamScanner

का सरल और सुस्पष्ट संकलन प्रस्तुत है, जिससे सर्व साधारण को समझने में सुगमता होगी।

मेरा प्रयास यह रहा है कि उन अनेक गोत्रावली एवं विज्ञजनों से गोत्रादि पुष्प का संग्रह करके, एक माला के रूप में पिरोकर, सर्व गौड़ विप्र बन्धुओं की सेवा में प्रस्तुत करके सौभाग्य का अनुभव कर सकूँ।

यथा संभव सम्पूर्ण शासनों (अल्ल, अवटंक) का संकलन करने का प्रयास किया गया है। प्रमाणित विवरण उपलब्ध न होने से कुछ कमी रह गई है, इसमें जिन विप्र बन्धुओं का गोत्रादि छूट गया हो, कृपया सूचित करने की कृपा करें ताकि द्वितीय संस्करण में जोड़ दिया जाएगा।

पाश्चात्य कुसभ्यता के प्रभाव में विप्र समाज में अनेक व्यसन और कुरीतियाँ पनप रही हैं, इससे मैं दुखी हूँ।

आज के युग में सभी के लिये ब्रह्म ज्ञानी होना और त्रिकाल संध्या करना, धर्मशास्त्र का ज्ञाता होना संभव नहीं है, किन्तु हमने जिन कुल प्रवर्तक ऋषि के वंश-परम्परा में जन्म लिया है, उनके बताये आचरण, सदाचार सहृद व्यवहार, शाकाहार, पवित्राचार, दया भाव, अहिंसा और नैतिकता का तो पालन कर सकते हैं? काश! हम इन गुणों का पालन कर सकें तो हम ब्राह्मण कहलाने के अधिकारी हैं, अन्यथा कत्तई नहीं। धृष्टता के लिये क्षमा।

अन्त में नम्र निवेदन करता हूँ कि मेरी अनभिज्ञता के कारण गोत्रादि में अथवा लेखादि में कोई असंगति या त्रुटियाँ हो गई हो तो विज्ञ गुरुजन क्षमा करेंगे।

-विप्र अनुचर

गोविन्दलाल गौड़

Scanned with CamScanner

पूज्या मातेश्वरी
स्व. पांरा बाई
आत्मजा
स्व. चतुर्भुज जी मिश्र
गोत्र - वत्स
शासन - मंडावरिया
पदवी - मिश्र

पूज्य पिता श्री
स्व. हीरालाल जी गौड़
आत्मज
स्व. रामप्रसाद जी गौड़
गोत्र - कश्यप
शासन - भोगर
पदवी - तिवारी

गोविन्दलाल गौड़ जन्म १९८७ वि.सं.

संक्षिप्त वंशावली एवं संक्षिप्त इतिहास संकलनकर्त्ता

विक्रम सं. ९०५ में पं. भोगदराम जी ख्याति प्राप्त विद्वान, लाहोर (पूर्व भारत) के निवासी थे। इनके वंशज कालान्तर में राजस्थान के अनेक गाँवों में आकर बस गये और आज भी हैं। वि.सं. १८७० से क्रमिक वंशावली प्रस्तुत :-

१. छीतरमल जी, तस्य पुत्र २. तेजराम जी, तस्य पुत्र ३. टेकचन्द जी, तस्य पुत्र ४. खूबचन्द जी, तस्य पुत्र ५. पूरणमल जी, तस्य पुत्र ६. रामप्रसाद जी, तस्य पुत्र ७. हीरालाल जी, तस्य पुत्र ८. गोविन्दलाल गौड़, तस्य पुत्रगण- १. मोहनलाल, २. सोहनलाल, ३. नटवरलाल, ४. मनोज कुमार एवं उक्त वंश का वृहद् विस्तार हो गया है। भारत के अनेक गाँव-नगर में निवास कर रहे हैं।

वर्ण-ब्राह्मण (गौड़) गोत्र-कश्यप, शासन-भोगर, पदवी-तिवारी, त्रिप्रवर, कश्यप, वत्स, नैध्रुव, शाखा-माध्यन्दिनी, सूत्र पारस्कर, वेद-यजुर्वेद, उपवेद-धनुर्वेद, कुलदेवी-चावण्डा, गणपति-गोलनां, शुभनां-भैरव, शिखा-दक्षिणे, पाद-दक्षिणे।

Scanned with CamScanner

आशीर्वचन

दिनांक : १५-८-२००३

पं. विशुद्धानन्द शास्त्री, 'साहित्य रत्न', 'ब्रह्मर्षि ब्राह्मण रत्न', 'गौड़ रत्न' एवं फोरेन रिटर्नड्, भूतपूर्व अध्यक्ष एवं प्राचार्य (राज्य स्तर, राष्ट्र स्तर एवं विश्व स्तर पर सम्मानित)।

मैंने गौड़ विप्र पञ्चाङ्ग गोत्रावली का प्रकाशन के पूर्व सांगोपांग अवलोकन किया, इसमें गोत्रावली के पंच अंग-१. गोत्र, २. शासन, ३. पदवी, ४. प्रवर और ५. शाखा प्रमुख्य हैं।

उपलब्ध प्रमाणित ग्रन्थों से वृहद् संकलन किया गया है। इसमें आदि गौड़ या गौड़ ब्राह्मण के नाम से सम्बोधित होने वाले विप्र बन्धुओं को सरल जानकारी प्रस्तुत की गई है।

अत: संकलनकर्त्ता श्री गोविन्दलाल गौड़ के इस अथक् प्रयास की सराहना करता हूँ। मुझे प्रसन्नता है कि इस गोत्रावली से सभी गौड़ विप्र बन्धुओं को अपने गोत्रादि की पूर्ण और प्रमाणित जानकारी उपलब्ध होगी।

अनन्त कोटि ब्राह्माण्ड नायक अखिलेश्वर पूर्ण ब्रह्म परमात्मा से कामना की जाती है कि संकलनकर्त्ता श्री गौड़ महोदय को दीर्घायुस्य प्रदान करें और अपने दुर्जय पथ पर आरूढ़ होते हुए, इस स्वतंत्र भारत में अग्रसर होवें।

सदैव उत्तरोत्तर उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ-

विदुषायनुचर

विश्वमान्य-विशुद्धानन्द शास्त्री

श्री सत्यनारायण सदन

आगर तहसील-थानागाजी

जिला अलवर (राजस्थान)

Scanned with CamScanner

गौड़ ब्राह्मण ही वस्तुतः 'आदि' विशेषन जुड़ने पर 'आदि गौड़ ब्राह्मण' के नाम से प्रसिद्ध एवं मर्यादित हुए हैं

शास्त्रोक्त प्रमाणों का उल्लेख प्रस्तुत :-

सारस्वता, कान्यकुब्जा, गौड़, उत्कल, मैथिला।
पंचगौड़ा इतिख्याता:, विंध्यस्तोत्तर वासिना॥
कर्णाटकाश्च-तैलंगा, द्राविड़ा-महाराष्ट्र का।
गुर्जराश्चेति पंचैव द्राविड़ा विंध्य दक्षिण वासिना॥

अर्थात्-उत्तर भारतीय पंच ब्राह्मण, गौड़ **संज्ञा** के अन्तर्गत एवं दक्षिण भारतीय पंच ब्राह्मण द्रविड़ **संज्ञा** के अन्तर्गत कहलाये हैं।

भारतीय दक्षिणोत्तर मध्यरेखा पर स्थित कुरुक्षेत्र से बहने वाली सरस्वती के पश्चिम प्रान्त के निवासी सभी गौड़ ब्राह्मण-सरस्वती के विशेष नाम से सारस्वत, कन्नौज के आस-पास के निवासी कान्यकुब्ज, मिथिला क्षेत्र के निवासी-मैथिल तथा उत्कल (उड़ीसा) के निवासी उत्कल ब्राह्मण कहलाये।

इससे बचा हुआ जो उत्तर भारत का भू-भाग जैसे-कुरु, मत्स्य, शूर से पञ्चाल तक के निवासी गौड़ ब्राह्मणों पर कोई विशेष नाम न जुड़ने से केवल गौड़ ब्राह्मण कहलाये। अर्थात्-सारस्वत, कान्यकुब्ज, मैथिल, उत्कल इन चारों नामों से आदि भूत केवल गौड़ शब्द ही जिन पर लागू रहा वे आदि गौड़ ब्राह्मण कहलाये। इस प्रकार गौड़ तथा आदि गौड़ ब्राह्मणों में कोई भेद नहीं है। सभी उत्तर भारत के ब्राह्मण गौड़ ब्राह्मण के अंग हैं।

१. प्रमाण :-श्लोक स्कन्द पुराणे - गौड़ स्मीतौ च -

देवर्षि गौड़ देशाश्च ह्यादि गौड़ा: समागता:।
द्वापरान्ते महातीर्थे सर्व यज्ञे तपोधन:॥

Scanned with CamScanner

तोभ्यो राजाददौ ग्रामान् समसंख्यात्मकान् मुदाः।
चत्वारिश च्चतुर्युक्तं चतुर्दश शतानिचः॥

२. ब्राह्मणोत्पत्ति निबन्धे - गौड़ स्मीतौ च –

आदि गौड़ द्विजाः सर्वे ब्रह्मर्षि देश वासिनः।
वेदशास्त्र पुराणज्ञाः श्रोत स्मार्त्त परायणाः॥
शाखा माध्यन्दिनीतेषां वेदः शुक्लः यजुस्मृतः।
वासिष्टादीनि गोत्राणि सूत्रं कात्यायनं स्मृतम्॥
वेदाब्ध्यब्धीन्दु ग्रामाणां शासनाच्छासनाः स्मृताः।
पूज्याः सर्वोत्तमा गौड़ा मद्यमांस विवर्जिताः॥

३. ब्राह्मणोत्पत्ति निबन्धे –

आदौ ये ब्राह्मणाः जाताः ब्रह्म क्षेत्र तपोधनाः।
सर्वे वेदधराः लोके सदाचार प्रवर्तकाः॥
आदि गौड़ाश्च तै ज्ञेयाब्रह्मक्षेत्र निवासिनः।
तेभ्यो विनिर्गताः भूम्यां प्रसिद्धा दशं ब्राह्मणाः॥
सारस्वताः कान्यकुब्जाः, गौड़ उत्कल मैथिला।
पंच गौड़ा इति ख्याताः, विंध्यस्तोत्तर वासिना॥
कर्णाटकाश्च तैलंगा, द्राविड़ा महाराष्ट्रका।
गुर्जराश्चेतिपंचैव द्राविड़ा विंध्य दक्षिणेवासिना॥
अन्येऽपि बहवः सन्ति प्रकीर्णाश्चोप ब्राह्मणाः।
वसन्ति, दैव योगेन ब्राह्मणाः यत्र-तत्र वै॥
परस्परं च ते विप्राः ह्यभवत् भिन्न पंक्तयः।
खान पान सदाचारात् सम्बन्धोऽयभवत पृथक।
विद्या कर्म विहिनास्तु विप्राः शूद्रसमाः स्मृताः॥

४. ब्रह्मपुराणे च –

आदौ जाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणाः वेद पारगाः।
श्वेत वाराह कल्पेऽस्मिन्नादि गोडास्तपोधनाः॥

Scanned with CamScanner

५. गौड़ स्मृतौ –

श्वेत वाराह कल्पेऽस्मिन् ब्राह्मणा वेद पारगाः।
आदि गौड़ाः कुरुक्षेत्रे जाताः सर्वे तपोधनाः॥

६. महाभारते – (ब्राह्मणों का निवास) –

ब्रह्मवेदिः कुरुक्षेत्र पञ्चराम ह्रदान्तरम्।
धर्म क्षेत्र कुरु क्षेत्रं द्वादश योजनावधि॥

उपर्युक्त प्रमाणों से स्पष्ट हो जाता है कि आदि गौड़ ब्राह्मण सर्व देश में निवास करते हैं और पूज्य रहे हैं, शास्त्र सम्मत, आदि गौड़ और गौड़ ब्राह्मणों में कोई भिन्नता और भेद नहीं हैं।

सनाढ्य, गौड़ और आदि गौड़ ब्राह्मण मूल रूप से एक ही हैं :–

१. कथित सनाढ्य ब्राह्मण, जिनका वर्णन तपोनिष्ठ के रूप में किया गया है अर्थात् 'स' शब्द तप का नाम है, उसे करके जो आढ्य रहे यानी स + आढ्य = सनाढ्य नाम पड़ा, परन्तु ये भी आदि गौड़ ब्राह्मण ही हैं, इसमें संशय नहीं है।

सानाढ्य ब्राह्मणा श्रेष्ठास्तपसा दग्धकिल्विषा।
सच्छब्देन तपो तेनाढया ये द्विजोत्तमाः॥
ते सनाढ्या द्विजाः जाता ह्यादिगौडा न संशय।
तेषा भोजन सम्बन्धः कन्या सम्बन्ध एव च।
आदि गौडेषु भवति स्ववर्गेच विशेषतः॥

ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड पृष्ठ–५५२

२. श्री आदि गौड़ प्रदीपिका के पृष्ठ २७ में वर्णन है कि आदि गौड़ ब्राह्मणों के १४४४ शासन हैं, इनमें ७०३ शासन सनाढ्यों में गिने जाते हैं। जो आदि गौड़ ब्राह्मणों के अन्तर्गत आते हैं।

३. 'अल्ल गोत्र प्रवर पत्रावली', लेखक पं. गिरिराज प्रसाद जी नगायच,

Scanned with CamScanner

द्वारा लिखित, जिसमें वर्णन है कि–श्री रामचद्र जी द्वारा प्रदत्त ७०० ग्रामों के नाम से अल्ल प्रसिद्ध हुए अर्थात् जो जिस ग्राम में बसे उसी ग्राम के नाम से उनका अल्ल (शासन) हो गया।

स्पष्ट होता है कि श्री आदि गौड़ प्रदीपिका के पृष्ठ–२७ में भी ७०३ शासन (अल्ल) सनाढ्यों के बताये गये हैं। शासन की सम संख्या से प्रमाणित होता है कि वास्तव में सनाढ्य विप्र बन्धु गौड़ ब्राह्मण के अभिन्य अंग है। पूर्व काल में भावात्मक सिद्धान्त भेद के कारण सनाढ्य नाम पड़ा था, जबकि गौड़ ब्राह्मणों के १४४४ शासनों के अन्तर्गत इनके भी शासन हैं। गौड़ों और सनाढ्यों में वैवाहिक सम्बन्ध होता रहा है।

अत: आज के युग में इस रूढ़ी को मिटाना चाहिए। बल्कि सभी ब्राह्मणों को संगठित होकर राजनीतिक अधिकार प्राप्त करना चाहिए।

खेद है कि ब्राह्मण समाज के कुछेक व्यक्ति निकृष्ट खान–पान एवं व्यसन में अपनी मर्यादा का उल्लंघन करते हुए भी ब्राह्मण कह कर गौरवान्वित हो रहे हैं। यही कारण है कि आज कथित ब्राह्मण के चलते पूरा समाज कलंकित हो रहा है और ब्राह्मण विरोध की हवा बह रही है। हमें सावधान होना है। मेरी प्रार्थना है कि पूर्ववत् मर्यादा का पालन करते हुए आगे बढ़े।

प्रसन्नता की बात है कि आज सम्पूर्ण मानव समाज शिक्षा और ज्ञानवर्धन के लिये प्रयत्नशील है। अब केवल ब्राह्मण नाम से सम्मान का युग समाप्त हो गया है।

विगत दिनांक ११–८–२००४ को जयपुर में गोपुष्टि यज्ञ के समापन के पूर्व विद्वानों का सम्मान किया गया था, जिसमें ब्राह्मण विद्वानों की बहुल्यता के साथ ही अन्य वर्ण के विद्वानों को भी सम्मानित किया गया था। यह एक प्रशंसनीय व्यवस्था थी। एतर्थ आयोजकों को हार्दिक धन्यवाद।

–गोविन्दलाल गौड़
संकलनकर्त्ता

Scanned with CamScanner

सनाढ़्य ब्राह्मण नाम करण (सनाढ़्य संहिता के अनुसार) ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड के पृष्ठ ५५२-५३ में वर्णन

पूज्य पिता की आज्ञा पालन में श्रीराम, दण्डकारण्य में १४ वर्ष तक निवास किये थे। सीता हरण के कारण सकुल रावण का वध किया। अयोध्या लौटने पर ब्रह्म राक्षस के वध से शुद्धि निमित यज्ञ किया, उस यज्ञ में आदि गौड़ ब्राह्मणों को बुलाया। आदि गौड़ ब्राह्मणों ने विधि पूर्वक यज्ञ सम्पन्न कराया। संतुष्ट होकर श्रीराम ने दक्षिणा देकर सम्मानित किया। पश्चात् अवभृथ स्नान करके प्रथम वरण किये हुए ब्राह्मणों को दान देने लगे। उस यज्ञ में जिसने दान स्वीकार नहीं किया, वे आदि गौड़ ब्राह्मण ही बने रहे और जिन्होंने दान स्वीकार किया, वे ७५० ब्राह्मण थे, सभी को श्रीराम ने ग्राम दान किया था। उसी ग्राम के नाम से शासन (अवटंक-अल्ल) बना और वे सभी सनाढ़्य नाम से विख्यात हुए। ऐसे ये सनाढ़्य ब्राह्मण तप से जिनका पाप दूर हो गया है। 'स' शब्द तप का नाम है, उसमें जो आढ़्य रहे, वे ही सनाढ़्य कहलाये। परन्तु वे सब आदि गौड़ ब्राह्मण हैं। इसमें कोई संशय नहीं है।

श्लोक- सनाढ़्य ब्राह्मणेश्रेष्ठास्तपसा दग्धकिल्विषा।
सच्छब्देन तपो ग्राह्य तेना ढया ये द्विजोत्तमा॥ ८॥
ते सनाढ्या द्विजाः जाता ह्यादिगौड़ा न संशय।
तेषां भोज संबंधः कन्यासंबंध एव च॥ ९॥
आदि गौडेषु भवति स्ववर्गे च विशेषतः॥ १०॥ इति

सुना जाता है कि आदि गौड़ ब्राह्मण, सनाढ्यों की कन्या लेते तो हैं, परन्तु देते नहीं थे, अब लेना-देना प्रारम्भ हो गया है।

शास्त्रानुसार विचार किया जाय तो गौड़ एवं सनाढ्य नाम से संबोधित होने वाले, मूल रूप से आदि गौड़ ब्राह्मण ही हैं। विशेष बात तो यह है कि-'ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड' में केवल आदि गौड़ ब्राह्मणोत्पत्ति पृष्ठ ४२६ से २८ पर एवं सनाढ्य ब्राह्मणोत्पत्ति का पृष्ठ ५५२-५३ पर उल्लेख है। केवल गौड़ ब्राह्मण की उत्पत्ति का पृथक उल्लेख नहीं है, क्योंकि इनका पूरा नाम आदि गौड़ ब्राह्मण है।

हाँ, द्वादश गौड़ ब्राह्मण का उल्लेख ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड के पृष्ठ ५२० से २६ तक है, जिसका वर्णन आगे किया जाएगा।

संकलनकर्ता-गोविन्दलाल गौड़

Scanned with CamScanner

अन्य प्रदेशों में गौड़ ब्राह्मणों का गमनागमन

ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड के पृष्ठ ४३० पर उल्लेख है कि पूर्व में गौड़ ब्राह्मण काश्मिर के श्री हदृन नगर में रहते थे। देवकोप से वहाँ बड़ा दुष्काल पड़ने पर कुछेक लोग मारवाड़ कोई बांगड़ देश, कोई मालव देश में आकर बस गये। जब उनका भाग्योदय हुआ, तब मार्गशीर्ष शुक्ल–५ गुरुवार वि.सं. ११९० साल में वहाँ का प्रतापी राजा विजयसिंह ने दो सौ ब्राह्मणों को गाँव जागीर देकर जीविका का उत्तम प्रबन्ध कर दिया। साथ ही गौड़ ब्राह्मणों का कुल गोत्र शुद्ध आचार गुजराती संप्रदाय में स्थापन किया।

गौड़ ब्राह्मण श्री हदृन नगर से आये थे, इसलिये 'गौड़' के पूर्व 'श्री' विशेषण लगा और ये श्री गौड़ ब्राह्मण कहलाये। श्री गौड़ ब्राह्मणों में अनेक भेद हैं जैसे–नवे, जूने और अन्य भेद हैं। इन श्री गौड़ ब्राह्मणों का भोजन व्यवहार एवं कन्या सम्बन्ध, डेरोले व प्रवालिये इन दो भेदों को छोड़कर अन्य सभी में परस्पर करना युक्त है। इनके विवाह में गौरव भोजन के दिन लक्ष्मी जी (कुल देवी) की पूजा करने की प्रथा है और उस दिन ब्राह्मण घी पीते हैं।

इन श्री गौड़ ब्राह्मण सहित कुल बारह प्रकार के गौड़ ब्राह्मण होते हैं, जिनका वर्णन, इस गोत्रावली में यथा स्थान किया गया है, आगे पढ़ेंगे।

अर्थात् पंच गौड़ ब्राह्मण सहित सत्रह प्रकार के गौड़ ब्राह्मण हैं, जो 'गौड़' के पूर्व अन्य विशेषण लगाकर अपने को परिभाषित करते हैं। जैसा कि ग्रन्थों में उल्लेख है।

गोविन्दलाल गौड़
संकलनकर्ता

Scanned with CamScanner

शास्त्रार्थ की खुली चुनौती

सर्व सूचनार्थ प्रकाशित है कि आदि गौड़ एवं गौड़ ब्राह्मणों में भिन्यता रूपी जो भ्रम व्याप्त चला आ रहा था, इसका शास्त्रीय विधि से (भारतीय विभिन्न विद्वानों द्वारा समय-समय पर पत्र एवं पत्रिकाओं के माध्यम से) निवारण किया जा चुका है। वास्तव में भेद वाली कोई वार्ता नहीं है, तथापि यदि आशंका की अनुभूति हो तो निम्नलिखित हस्ताक्षर कर्ता से व्यक्तिगत सम्पर्क कर भ्रमात्मक निवारण कर सकते हैं।

यदि शास्त्रार्थ करने की स्थिति से (सन्नद्ध) हो तो सादर आमंत्रित हैं। शास्त्रार्थ (देववाणी) संस्कृत में संभव हो सकेगा।

'आदि गौड़ द्विजा: सर्वे ब्रह्मर्षि देशवासिन:'

आपका ही
पं. विशुद्धानन्द शास्त्री
साहित्यरत्न, गौड़रत्न, ब्रह्मर्षि,
ब्राह्मणरत्न, भूतपूर्व अध्यक्ष
एवं प्राचार्य (फोरेनरिटर्नड)
राज्यस्तर, राष्ट्रस्तर एवं विश्वस्तर
पर सम्मानित।
श्री सदस्यनारायण सदन
ग्राम-आगर (थानागाजी)
अलवर (राजस्थान)

Scanned with CamScanner

विचारणीय असंगतियाँ

प्रमाणित उपलब्ध ग्रन्थों के अध्ययन से स्पष्ट हुआ है कि एक ऋषि गोत्र के अन्तर्गत अनेक शासन होते हैं, साथ ही एक ही नाम के शासन का ऋषिगोत्र भिन्य भी है, सुरोलिया शासन का गोत्र कहीं भारद्वाज, कहीं वशिष्ठ लिखा है। इस प्रकार की भिन्यता कई गोत्र-शासन में है। एक ही शासन का उच्चारण दोष के कारण वर्तनी बदल गयी है, जैसे-खेडियावाल, खेडवाल, खेडिवाल और खेढ़वाल, सभी का गोत्र गौतम है। इसी प्रकार अनेक शासनों की पदवी, शाखा, सूत्रादि में भिन्यता है। गोत्रावली में यथावत लिखित है। संशोधन करने का अधिकार विज्ञजनों के शोध का विषय है। ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड ग्रन्थ में वर्णन है कि आर्यावत के महाराजा जनमेजय के यज्ञ को महर्षि वकटेश्वर मुनि ने अपने १४४४ शिष्यों के साथ सम्पन्न कराया था। तदुपरान्त राजा ने गुप्त रूप से सभी को ग्राम दान किया। आपत्ति के पश्चात राजा की प्रार्थना पर ग्रामदान स्वीकार कर लिया गया। जो जिस गाँव में बसा (शासन किया) उसी ग्राम के नाम पर उनका शासन कहलाया। संभव है १४४४ शिष्यों में कई सहोदर भाई भी गये होंगे, एक ही गोत्र के सहोदर भाइयों का ग्राम दानानुसार शासन में भिन्यता हो गयी होगी। हजारों वर्षों के अन्तराल में सहोदर भाइयों की संतानों का स्थान परिवर्तन के कारण एक-दूसरे से अनभिज्ञ हो जाना स्वाभाविक है। प्रथानुसार राजस्थानी, हरियाणवी, मालवा, पक्षिम उत्तरप्रदेश, दिल्ली के आसपास एवं कुरुक्षेत्रादि स्थानों में निवास करने वाले गौड़ ब्राह्मण जो भारत के किसी प्रदेश में रह रहे हों, मारवाड़ी ब्राह्मण के नाम से जाने जाते हैं। ये सभी विवाह सम्बन्ध में शासन को मिलान कर सम्बन्ध करते हैं। ऐसी स्थिति में सहोदर भाइयों का ग्रामदानुसार शासन भिन्य-भिन्य हो गया होगा। केवल शासन का मिला कर सम्बन्ध करने में एक ही वंश के वर कन्या का विवाह हो जाना संभव है क्या इसे धर्मसंगत कहा जा सकता है? कदापि नहीं।

Scanned with CamScanner

अतः इस दोष से बचने के लिये शासन के साथ ही ऋषिगोत्र मिलाना उचित है, ध्यान देने पर इस प्रथा में सुधार करना संभव है। ब्राह्मणों में ऋषि गोत्र टालना, कई प्रदेशों में प्रचलित है।

विशेष प्रमाणित जानकारी के लिये 'अल्ल गोत्र प्रवर पत्रावली' लेखक पं. गिरिराज प्रसाद नगायच कुम्भेर, भरतपुर एवं श्रीयादि गौड़ प्रदीपिका, लेखक पं. माधोलाल जी गौड़, गिल्याण पूर्व निवासी, गोविन्दगढ़ (अजमेर) द्वारा लिखित भूमिका में भी गोत्र टाल कर विवाह सम्बन्ध करने की राय दी है।

शास्त्रोक्त प्रमाण :-

अरूढ़ पतिताऽपत्यं ब्राह्मण यश्च शूद्रजः।
सगोत्रोढा सुतश्चैव चाण्डालास्त्रय ईरिताः॥

सन्यासी से उत्पन, ब्राह्मणी में शूद्र से उत्पन्न और समान गोत्र वाली कन्या से उत्पन्न ये तीनों ही सन्तानें चाण्डाल कहलाती हैं।

असपिण्डाच या मातु रस गोत्रा च यापितुः।
साप्रशस्ता द्विजातीनाम् दार कर्मणि मैथुने॥

जो कन्या माता की सात पीढ़ी में न हो और पिता के गोत्र की न हो, वह स्त्री सम्बन्ध करने योग्य हो सकती है।

महाराज मनु-

सकस्मिन्प्रवरे तुल्ये मातृ गोत्रे वरस्य च।
तमुद्वाहं न कुर्वीत सा कन्या भगिनी भवेत्॥

वर-कन्या समान गोत्र प्रवर के हों तब विवाह नहीं करना चाहिये, क्योंकि यह भाई-बहिन हुये।

प्रवर दर्पणकार-

वचन है-गोत्रयोर्न विवाहोस्ति प्रतिषेधस्मृते रपि।

समान गोत्र वाले वर-कन्या का विवाह समस्त स्मृतियों में निषिद्ध कहा गया है। ध्यान देने की बात है, यहाँ गोत्र-प्रवर तक टाल कर विवाह सम्बन्ध करने का निदेश दिया है, जबकि विप्र समाज केवल शासन टाल कर सम्बन्ध करते हैं, प्रायः सभी विप्र, ऋषि गोत्र समान में भी सम्बन्ध कर रहे हैं। इसमें सुधार करना चाहिये।

—गोविन्दलाल गौड़

Scanned with CamScanner

मनुष्योत्पत्ति एवं वर्ण व्यवस्था

सृष्टि के विकास क्रम में जिस समय मनुष्य की उत्पत्ति हुई थी, उस समय मनुष्य की केवल मनुष्य जाति थी। कालान्तर में महर्षियों ने मनुष्य के गुण-कर्ण, खान-पान, स्वभाव, आचरण और प्रतिभा को दृष्टिगत रखकर चार वर्णों में विभाजित कर दिया।

श्लोक- ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत, बाहू राजन्य कृत।
ऊरूतदस्तद्वैश्य पदभ्यां ठ. शुद्रो अजायत॥
-यजुर्वेद अध्याय-३१ मंत्र-११

चातुर्वर्ण्य मया सृष्टम् गुणकर्म विभागशः।
तस्य कर्तारमपि मां विद्धय कर्तारमव्ययम्॥ १३॥
संदर्भ गीता अ० ४-१३

व्याख्या-जिस मनुष्य का कर्म मुख (मस्तिक) प्रधान था वे ब्राह्मण वर्ण में चयनित हुए, जिनका कर्म बाहू-बल प्रधान न्यायोचित धर्म पालक थे, उन्हें क्षत्रिय वर्ण में तथा जिनका कर्म ऊरु प्रधान, कृषक, उद्यमी, व्यवसायी, पशुपालक व धार्मिक रहा उन्हें वैश्य वर्ण में और जो अशिक्षित, अकुशल, परिश्रमी एवं पद प्रधान कार्य करने वाले शूद्र वर्ण में चयन हुए। उस समय एक ही माता-पिता की संतानें गुण-कर्म के अनुसार चार वर्णों में विभाजित हो जाती थी। कोई आरक्षण एवं पक्ष्यपात नहीं था।

शास्त्रानुसार ब्राह्मण वर्ण है, जाति नहीं। जाति तो सभी की मनुष्य है। गुण-कर्म, प्रतिभा, आचरणानुसार सभी सम्प्रदाय, सभी धर्म में ब्राह्मण वर्ण के विद्वान हुए हैं। बल्कि पशु-पौधों से उत्पन्न होने वाले मनुष्य की चर्चा

Scanned with CamScanner

शास्त्रों में है, जैसे--श्रृंग ऋषि हरिणी से, कौशिक ऋषि दर्भ के गुच्छे से, वशिष्ठ ऋषि वेश्या से, वेदव्यास कैवर्त कन्या से, भारद्वाज ऋषि शूद्री से, विश्वामित्र क्षत्रिया स्त्री से, नारद दासी से, ऐसे अनेक प्रमाण है। यह विचारणीय विषय है कि हम अपने पूर्व श्रेष्ठ कुल प्रवर्तक ऋषियों की वंश परम्परा में उत्पन हुए हैं, यह गौरव की बात है। मगर हम क्या वर्ण व्यवस्था के अनुसार आचरण कर रहे हैं? अन्धकार में बैठकर सूर्य के नाम का जाप करने से प्रकाश नहीं होगा, बल्कि हमें दीपक जलाना होगा। कथित ब्राह्मण समुदाय यह मान कर चल रहा कि हमने ब्राह्मण कुल में जन्म लिया है, हम ब्राह्मण हैं, यह भ्रम और अज्ञानता है। आत्मचिन्तन करना चाहिये। यह विनय है।

पुनः वर्ण व्यवस्था के पश्चात् महर्षियों ने स्थानानुसार ब्राह्मणों को दो भागों में बांट दिया।

श्लोक-

सारस्वत कान्यकुब्जा गौड़ उत्कल मैथिला।
पंच गौड़ा इतिख्याता विंध्यस्योत्तर वासिना॥
कर्णाट काश्च तैलंगा द्राविड़ा महाराष्टका।
गुर्जराश्चेति पंचैव द्राविड़ा विंध्यदक्षिणे॥

अर्थात्-सारस्वत, कान्यकुब्ज, उत्कल और मैथिल ये गौड़ ब्राह्मण ही हैं, स्थान भिन्यता से नाम बदल गया है। जो आदिकाल से गौड़ प्रदेश में हैं, वे आदि गौड़ ब्राह्मण हैं।

विशेष प्रमाणित जानकारी के लिये "श्रीआदि गौड़ प्रदीपिका" का अवलोकन करें। पं. रामप्रसाद माधोलाल गौड़, गिल्याण, गोविन्दगढ़, अजमेर।

कुछेक का कहना है कि गौड़ ब्राह्मण गौड़ बंगाले से आये थे। यह सत्य नहीं है। बल्कि सहस्त्र वर्ष पूर्व वैद्य कुल के महाराज

Scanned with CamScanner

बंगदेशाधिपति स्थानिय ब्राह्मणों से रुष्ट होकर कान्यकुब्जाधिपति के द्वारा पाँच गौड़ ब्राह्मण को बुलाये और भूमि एवं अर्थ दान देकर बसा दिये। तब से उस नगर का नाम गौड़ प्रदेश हो गया। बंगाल से इधर आने का प्रमाण, पुराण-इतिहास में नहीं है। अगर बंगाल से आये होते तो गौड़ ब्राह्मणों में बंगाल का संस्कार यानी खान-पान, रीति-रिवाज, बोल-चाल का कुछ न कुछ प्रभाव होता।

ग्रन्थों में वर्णन है कि पूर्व में गंगा व गण्डवी का संगम, पश्चिम और दक्षिण दिशा में सरयू, उत्तर में हिमालय के मध्य की भूमि का नाम गौड़ देश है। बंगाल से गौड़ ब्राह्मण आये, यह अनभिज्ञ लोगों का कहना है।

मनुमहाराज का कथन–

सरस्वति ब्रह्मद्वत्यैं देवनथोर्यदंतरम्।
तंदेवं निर्मितं देशं ब्रह्मावर्त प्रचक्षते॥
तस्मिन् देशेय आचारः पारं पर्यास भागतः।
वर्णनांशांतरालानां सदाचार उच्चते॥
कुरुक्षेत्रश्च मत्स्याश्च पांचाला सूरसेनका।
एषब्रह्मर्ऋषिर्देशोर्व ब्रह्मावर्त दिनं तरम्॥
एतदेश प्रसुतस्य सकासा दग्रजन्मनः।
स्वस्वचरित्रं सिक्षेरम् पृथ्विव्यां सर्व मानवा॥

अर्थात्–गंगा, सरस्वती इनके मध्यम में जो देश है उसको ब्रह्मावर्त कहते हैं, कुरुक्षेत्र, मत्स्यदेश, पांचाल, सूरसेनादि प्रान्त यह ब्रह्मर्ऋषि देश हैं। इस क्षेत्र में उत्पन्न ब्राह्मण के साथ पृथ्वी के सम्पूर्ण मनुष्य सचरित्र शिक्षा पाये। कुरुक्षेत्रादि देश निवासी ब्राह्मण आचार शिक्षा को देने वाले, सृष्टि उत्पत्ति से आज तक हैं। उक्त देशों में निवास करने वाले पंच गौड़ ब्राह्मणों का मूल स्थान है। गौड़ ब्राह्मण बंगाल से आये, यह शास्त्रों में वर्णन नहीं है। किंवदन्ति है।

–गोविन्दलाल गौड़

Scanned with CamScanner

वेदों की सोलह शाखाएँ और सूत्रादि

१. ऋग्वेद की पाँच–१. शाकल, २. वाष्कल, ३. आश्वलाइन, ४. शांखायत, ५. मण्डकेय।

२. यजुर्वेद की चार–१. कठ, २. कालाप, ३. तैत्तरीय और ४. वाजसनीय (जिसके अन्तर्गत माध्यन्दिनी और काण्वी) दो प्रति शाखाएँ हुई।

३. सामदेव की एक–१. कौथुमी।

४. अथर्ववेद की छः–१. सुमन्त, २. लाललि, ३. शौत्कायणी, ४. शौनक, ५. पिप्पलाद, ६. मंजुकेश। कुल सोलह शाखाएँ है।

१. ऋग्वेद का सूत्र–आश्वलाइन, २. यजुर्वेद का कात्यायणा, ३. सामदेव का गोभिल, ४. अथर्ववेद का वैतान सूत्र है।

कुछ विद्वान इन सूत्रों को दो ही प्रकार का मानते हैं जैसे–

केवल श्रुति वाक्यानां पद्धतिः श्रौत लक्षणम्।
स्मृति तात्पर्य सहितं तदेवस्मार्तमुच्यते॥

केवल श्रुति वाक्यों को पद्धति क्रम से कहना श्रौत सूत्रों का लक्षण है और स्मृतियों का तात्पर्य साथ में मिलाकर गृह्य कर्मों की पद्धति का वर्णन करने वाले स्मार्त या गृह्यसूत्र कहलाते हैं।

तानि सूत्राणि मांत्राणां संप्रोक्तानि पृथक–पृथक।
एकं श्रौतं परंस्मार्त प्रति गोत्रमिति स्थितिः॥

सब गोत्रों के सूत्र पृथक्–पृथक् माने जाते हैं। १. श्रौत, २. स्मार्त तथा प्रत्येक गृह्य गोत्र के दो सूत्र हैं जैसे–१. शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिनीय शाखाध्यायियों का कातीय श्रौत सूत्र और २. पारस्कर गृह्य सूत्र है।

शिखा और पाद :–प्रत्येक वेद की शाखा के अनुरूप ऋग्वेदियों, सामवेदियों और अथर्ववेदियों की शिखा और पाद बाम तथा यजुर्वेदियों का दाहिना पाद एवं शिखा होती है।

छन्द :–१. ऋग्वेदियों का गायत्री, २. यजुर्वेदियों का त्रिष्टुप तथा ३. सामा और ४. अथर्ववेदानुयायियों का अनुष्टुप छन्द होता है।

–गोविन्दलाल गौड़
संकलनकर्त्ता

Scanned with CamScanner

गोत्रावली के पञ्चाङ्ग परिचय

१. ऋषि गोत्र–जिस वंश के जो आदि ऋषि कुल प्रवर्तक हुए, उनका वही ऋषि गोत्र कहलाया।

२. शासन (अल्ल-अवटंक)–हजारों वर्ष पूर्व महाराजा जनमेजय द्वारा आयोजित यज्ञ को महर्षि बकटेश्वर मुनि ने अपने १४४४ शिष्यों के साथ सम्पन्न कराया। तदुपरान्त महाराजा ने गुप्त रूप से सभी ब्राह्मणों को ग्राम दान किया। आपत्ति के पश्चात् महाराजा की प्रार्थना स्वीकार कर, सभी ब्राह्मण प्राप्त ग्रामानुसार उसी ग्राम में बसा गये। तदानुसार जो जिस ग्राम में बसा (शासन किया) उसी ग्राम के नाम से उनका शासन कहलाया। सनाढ्य भी गौड़ ब्राह्मणों में हैं।

३. पदवी (उपाधि)–जिस वंश के ब्राह्मणों ने जिस वेद शास्त्र एवं कर्मकाण्ड का अध्ययन किया उसी के आधार पर उनकी पदवी हो गयी। चार वेद के ज्ञाता चतुर्यवेदी, चौबे, तीन वेद के तिवारी–त्रिवेदी, त्रिपाठी, दो वेद के द्विवेदी, दूबे, अग्निहोत्र करने वाले अग्निहोत्री, पुरोहिती करने वाले पुरोहित इत्यादि।

४. प्रवर (ग्रन्थी)–गोत्राकार ऋषियों के पश्चात् उनके पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र, शिष्यादि के क्रमानुसार प्रवर बना जिसकी संख्या ५ तक है।

५. शाखा–जिस कुल के प्रवराचार्यों ने जिस वेद की शाखा का पठन-पाठन अपनी रुचि से चलाया, उस कुल की वही शाखा कही गयी है। ऋषियों ने चारों वेदों को १६ शाखा में बाँट दिया।

श्लोक– तत्रवे प्रवराचार्ये शिखा निगमस्य च।
निजस्यैव मूदाधीता साशाखातत्कुलेस्मृता॥

इस गोत्रावली में हिन्दी वर्णमाला के अक्षरों के अनुसार शासन लिखे गये हैं, केवल व को ब के क्रम में दिया गया है। कोष्टक में जो शासन हैं, वह उसी शासन का पर्याय है। उच्चारण दोष के कारण एक शासन के कई पर्याय बन गया है। कृपया शासन और गोत्र को समझ कर पूर्ण जानकारी प्राप्त करें।

गोविन्दलाल गौड़
संकलनकर्ता

Scanned with CamScanner

गौड़ विप्र पञ्चाङ्ग गोत्रावली

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
१.	अवर्धा	काश्यप	जोणी	३	माध्यन्दिनी
२.	अजमेधा	वाक्षिल्य	पुरोहित	३	''
३.	अरवलिया	अत्रिय	जोषी	३	''
४.	अडिचवाल	अत्रिय	जोषी	३	''
५.	अष्टाविणा	मौदगल्य	पुरोहित	३	''
६.	अन्टागुरे	वत्स	मिश्र	३	''
७.	अदरत्त	काशकृतस्नु	पुरोहित	३	''
८.	अंधोपिया	वत्य	मिश्र	३	''
९.	(धोपिया)	वत्स	मिश्र	३	''
१०.	अक्षकूटा	गौदगल्य	पुरोहित	३	''
११.	अखवरिया	कविस्त	वाजपेयी	३	''
१२.	अगरोइया	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	''
१३.	अडींगिया	भार्गव	दीक्षित	३	''
१४.	आनौरिया	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	''
१५.	आस्तीयाणा	मौदगल्य	पुरोहित	३	''
१६.	आस्टो	वत्स	मिश्र	३	''
१७.	आरठिया	अत्री	शुक्ल	३	''
१८.	ओडिवाल	रेवण	पुरोहित	३	''
१९.	ओजाचाण	सोमराज	जोषी	३	''

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
२०.	अगरिया	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी
२१.	आटोलिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
२२.	औढ़ाका	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
२३.	आष्टायन	कौशिक	अग्निहोत्री	३	आश्वलायन
२४.	अलसेलिया	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी
२५.	ओष्टी	वात्सना	जोणी	५	"
२६.	असवरिया	भारद्वाज	जोषी	३	"
२७.	अभीस्यप्रधान	भृगु	व्यास	३	"
२८.	आवेठयाप्रधान	अत्रिय	जोषी	३	"
२९.	अंगुठिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
३०.	अखवड़या	कविस्त	वाजपेयी	३	"
३१.	अलवरिये	भारद्वाज	जोषी	३	"
३२.	इन्दोरिया	कविस्त	वाजपेयी	३	"
३३.	इन्दोर्या	भारद्वाज	जोषी	३	"
३४.	इच्छावत	धनञ्जय	त्रिवेदी	३	कौथुमी
३५.	इष्टान्या	मौदगल्य	पुरोहित	३	माध्यन्दिनी
३६.	ईण	मौदगल्य	पुरोहित	३	वाजसनी
३७.	इकटया	वाक्षिल्य	पुरोहित	३	"
३८.	इन्दोरिया	भारद्वाज	जोषी	३	माध्यन्दिनी
३९.	इन्दोरिया	गौतम	अग्निहोत्री	३	"
४०.	इषन्या	भौगिल्य	पांडे	३	"
४१.	इन्दोरिया	गौतम	जोषी	३	"
४२.	उड़ीचवाल	भारद्वाज	पांडे	३	"
४३.	उड़का	वाक्षिल्य	पुरोहित	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
४४.	उसिलिया	आलम्वायन	जोषी	३	माध्यन्दिनी
४५.	उगीकल	जमदग्नि	श्रोत्रिय	५	"
४६.	उठवारिया	धनञ्जय	त्रिवेदी	३	कौथुमी
४७.	उपाध्याय	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
४८.	उग्रतपा	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
४९.	उइछला	अगस्त	जोषी	३	माध्यन्दिनी
५०.	उमरावतिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
५१.	ऊटलोदिया	कौशिक	व्यास	३	"
५२.	उठागरा	भारद्वाज	पांडे	३	"
५३.	उपमन	भारद्वाज	जोषी	३	"
५४.	उपमन	भारद्वाज	उपाध्याय	३	"
५५.	ऐरंडवाल	कौशिक	व्यास	३	माध्यन्दिनी
५६.	एकटया	वाक्षिल्य	पुरोहित	३	"
५७.	ऐरंडवाल	कौशिक	अग्निहोत्री	३	आश्वलायन
५८.	काल्या	कश्यप	जोषी	३	माध्यन्दिनी
५९.	कंडा	अंगिरा	जोषी	३	"
६०.	ककरेटिया	कौशिक	अग्निहोत्री	३	"
६१.	कराहरीवाल	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	"
६२.	कंनौजिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
६३.	करंटा	वृहस्पती	जोषी	३	"
६४.	कंछेरिया	कविस्त	वाजपेयी	३	"
६५.	(कन्छला)	कविस्त	वाजपेयी	३	"
६६.	काकलवाल	उपमन्यु	दीक्षित	३	"
६७.	कोल्या	कश्यप	तिवारी	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
६८.	कारताण्या	कौशिक	अग्निहोत्री	३	माध्यन्दिनी
६९.	कापल्या	भार्गव	दीक्षित	३	"
७०.	कांकर	अंगिरा	जोषी	३	"
७१.	कापटी	बृहस्पती	जोषी	३	"
७२.	कातोला	मौद्गल्य	पुरोहित	३	"
७३.	कापल्या	भार्गव	जोषी	३	"
७४.	कोहिनिया	वत्स	मिश्र	३	"
७५.	किरीट	भार्गव	दीक्षित	४	"
७६.	कोहनिया	कविस्त	वाजपेयी	३	"
७७.	करनोलिया	परासर	स्वामी	३	"
७८.	करीरहट	कौशिक	अग्निहोत्री	३	अश्वलायन
७९.	काकिलवाल	कौशिक	अग्निहो	३	"
८०.	कोडवाल	वत्स	मिश्र	३	माध्यन्दिनी
८१.	काकडंया	काश्यप	जोषी	३	"
८२.	कटेवरिया	काश्यप	जोषी	३	"
८३.	कानोल्या	मुद्गल	पुरोहित	३	"
८४.	कडकोला	कृष्णात्रेण्याय	व्यास	३	वजसनीय
८५.	करजालिया	परासर	मिश्र	३	माध्यन्दिनी
८६.	कलेडिया	शांडिल्य	अग्निहोत्री	३	"
८७.	कुलचानिया	कौशिक	जोषी	३	अश्वलायन
८८.	कटारो	काश्यप	जोषी	३	माध्यन्दिनी
८९.	कलमुखा	काश्यप	जोषी	३	"
९०.	किशनपुरिया	बलि	जोषी	५	"
९१.	कहाड	बलि	जोषी	५	"

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
९२.	कटुमरा	बलि	जोषी	५	माध्यन्दिनी
९३.	कोलिवाल	कौशिक	अग्निहोत्री	३	”
९४.	किपेनी	वृहस्पती	जोषी	३	”
९५.	कारटमार	मालवंना	जोषी	३	”
९६.	कीपन	बलि	जोषी	५	”
९७.	कोल्या	अगस्त	जोषी	३	”
९८.	किनमासिया	कौशिक	अग्निहोत्री	३	आश्वलायन
९९.	किरारीवाल	भार्गव	दीक्षित	४	माध्यन्दिनी
१००.	कुणिजा	भारद्वाज	पांडे	३	”
१०१.	कैरारिया	कश्यप	तिवारी	३	”
१०२.	कोचप	कौशिक	अग्निहोत्री	३	आश्वलायन
१०३.	कोकासिया	गर्ग	दीक्षित	३	पिप्पलायनी
१०४.	कोदीवाल	धनञ्जय	त्रिवेदी	३	कौथुमी
१०५.	कोइन्दा	विश्वामित्र	व्यास	३	माध्यन्दिनी
१०६.	करतल	रेवण	पुरोहित	३	”
१०७.	कलकटा	वाशिष्ठ	व्यास	३	”
१०८.	काकसीया	गर्ग	जोषी	३	”
१०९.	काट	विष्णु	व्यास	३	”
११०.	कास्माटी	शोरी	पुरोहित	३	”
१११.	काष्टानी	शोरी	पुरोहित	३	”
११२.	कुलिदिया	सोमराज	जोषी	३	”
११३.	कासाणी	सोमराज	जोषी	३	”
११४.	ककरूढ़ा	अष्टावक्र	जोषी	३	”
११५.	ककरा	दालभ्य	जोषी	३	”

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
११६.	कावलवा	जामाली	आचार्य	३	माध्यन्दिनी
११७.	कुकड़	दरमायन	व्यास	२	"
११८.	कालुंका	कांचन	व्यास	३	"
११९.	कुरानवाल	कौशिक	अग्निहोत्री	३	आश्वलायन
१२०.	ककड़	कौशिक	अग्निहोत्री	३	"
१२१.	कालूंडिया	भारद्वाज	जोषी	३	माध्यन्दिनी
१२२.	कलावटिया	भारद्वाज	जोषी	३	"
१२३.	केड़ेवाल	भारद्वाज	जोषी	३	"
१२४.	काकंनोधिया	भारद्वाज	जोषी	३	"
१२५.	कटवाड़िया	भारद्वाज	पांडे	३	"
१२६.	कुंजवाल	भारद्वाज	पांडे	३	"
१२७.	काठ	गोलव	पांडे	३	"
१२८.	कसारिया	मुदगल	पुरोहित	३	"
१२९.	काकयाणी	मुदगल	पुरोहित	३	"
१३०.	(काकयाण)	मुदगल	पुरोहित	३	"
१३१.	कामड़ोवाल	मुदगल	पुरोहित	३	"
१३२.	कालीनूरा	शांडिल्य	अग्निहोत्री	३	कौथुमी
१३३.	कण्डवाल	शांडिल्य	अग्निहोत्री	३	कौथुमी
१३४.	काणुबड़िया	हरित	जोषी	३	माध्यन्दिनी
१३५.	कण्डोरा	हरित	जोषी	३	"
१३६.	कटवारिया	श्रोसेश्वर	जोषी	३	"
१३७.	कलसोता	भृगु	व्यास	३	"
१३८.	कल्याण	व्योंग	आचार्य	३	"
१३९.	करमाणिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
१४०.	कंकरीट	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
१४१.	कामियफुटवा	कौशिक	व्यास	३	माध्यन्दिनी
१४२.	कस	वैयाग्रपद्य	व्यास	मेक प्रवरा	,,
१४३.	ककुथल	शक्ति	जोशी	३	,,
१४४.	कानुडया	काणवायन	जोषी	५	,,
१४५.	करंडवाल	बासुकी	व्यास	२	,,
१४६.	करवा	गोलव	शुक्ल	३	,,
१४७.	कुरुक्षेत्री	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	,,
१४८.	कुंडीलिया	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	,,
१४९.	कंकरीट	वशिष्ठ	जोशी	३	,,
१५०.	कलानोरिया	कौशिक	अग्निहोत्री	३	आश्वलायन
१५१.	कनौड़िया	गौतम	अग्निहोत्री	३	माध्यन्दिनी
१५२.	कुरुक्षेत्रिय	काश्यप	तिवारी	३	,,
१५३.	कनरवलिया	अत्रिय	जोषी	३	,,
१५४.	कारपूड़िया	अत्रिय	जोषी	३	,,
१५५.	केडेलिया	अत्रिय	जोषी	३	,,
१५६.	कुन्धरा पंडा	अत्रिय	जोषी	३	,,
१५७.	कसमपरिया	अत्रिय	जोषी	३	,,
१५८.	कुकसा	अत्रिय	जोषी	३	माध्यन्दिनी
१५९.	कुण्डोलिया	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	,,
१६०.	कथलिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
१६१.	कुलताजपरिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	,,
१६२.	कवरवाल	कौशिक	व्यास	३	माध्यन्दिनी
१६३.	कोटिया	कौशिक	व्यास	३	,,

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
१६४.	कलानोरिया	कौशिक	व्यास	३	माध्यन्दिनी
१६५.	कोरक	कश्यप	तिवारी	३	,,
१६६.	करीरे	भारद्वाज	दूबे	३	,,
१६७.	कुबानियां	च्वमन	पुरोहित	३	,,
१६८.	कंनानोरिया	भारद्वाज	जोषी	३	,,
१६९.	खाकस्या	अत्रिय	जोषी	३	माध्यन्दिनी
१७०.	खंत्वाल	भारद्वाज	पांडे	३	,,
१७१.	खोज	हारित	व्यास	३	,,
१७२.	खरवालिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
१७३.	खरीट	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी
१७४.	खेरवाल	भारद्वाज	जोषी	३	,,
१७५.	खोज	भारद्वाज	पांडे	३	,,
१७६.	खरीठ	बासुकी	यास	२	,,
१७७.	खरखेलिया	उद्दालक	पाठक	३	,,
१७८.	(खेरवलिया)	उद्दालक	पाठक	३	,,
१७९.	खडनावल्या	वशिष्ट	शुक्ल	३	,,
१८०.	खाटरवाल	काशकृतस्नु	पुरोहित	३	,,
१८१.	(खरसटवाल)	काशकृतस्नु	पुरोहित	३	वदवायन
१८२.	खामपुरिया	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	माध्यन्दिनी
१८३.	खाचरया	शौनक	द्विवेदी	३	,,
१८४.	खारीठ	सोपायन	मिश्र	५	,,
१८५.	खिरारीवाल	यमदग्नि	श्रोत्रिय	५	,,
१८६.	खुडाण्या	शांडिल्य	अग्निहोत्री	३	,,
१८७.	खेडियावाल	गौतम	अग्निहोत्री	३	,,

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
१८८.	(खेडवाल)	गौतम	अग्निहोत्री	३	माध्यन्दिनी
१८९.	(खेडिवाल)	गौतम	अग्निहोत्री	३	"
१९०.	खेढ़वाल	गौतम	अग्निहोत्री	३	"
१९१.	खैरारिया	वशिष्ठ	शुक्ला	३	कौथुमी
१९२.	खाडोलिया	भारद्वाज	जोषी	३	माध्यन्दिनी
१९३.	खःख	जन्हू	व्यास	३	"
१९४.	खरवरिया	वाक्षिल्य	पुरोहित	३	"
१९५.	खावड़ा	अगस्त	जोषी	३	"
१९६.	खैरवाल	वशिष्ठ	शुक्ला	३	कौथुमी
१९७.	खन्तवाल	भारद्वाज	जोषी	३	माध्यन्दिनी
१९८.	खारल्या	केशव	जोषी	३	"
१९९.	गींझवाल	भारद्वाज	पांडे	३	"
२००.	गोसरत	भारद्वाज	पांडे	३	"
२०१.	गलियन	भारद्वाज	पांडे	३	"
२०२.	गाल्याण	भारद्वाज	पांडे	३	"
२०३.	गोहरिया	वत्स	मिश्र	५	"
२०४.	गंगापुरिया	अंगिरा	जोषी	३	"
२०५.	गीलार्‍या	अंगिरा	जोषी	३	"
२०६.	गोधड़िया	भारद्वाज	पांडे	३	"
२०७.	गगरवाल	अंगिरा	जोषी	३	"
२०८.	गोरवला	कौशिक	अग्निहोत्री	३	आश्वलायन
२०९.	गजरावत	मुदगल्य	पुरोहित	३	"
२१०.	गुलानिया	मुदगल्य	पुरोहित	३	"
२११.	गढ़वाल	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
२१२.	(गोंडवाल)	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी
२१३.	गंगावत	भारद्वाज	पांडे	३	"
२१४.	गगरीवाल	मौदगल्य	पुरोहित	३	"
२१५.	गंधा	मौदगल्य	पुरोहित	३	"
२१६.	गरपत	मौदगल्य	पुरोहित	३	"
२१७.	गगड़	मोदगल्य	पुरोहित	३	"
२१८.	गल	मोदगल्य	पुरोहित	३	"
२१९.	गलिवाल	काशकृतस्तु	पुरोहित	३	"
२२०.	गदनाना	काशकृतस्तु	पुरोहित	३	"
२२१.	गाजरवाल	मोदगल्य	पुरोहित	३	"
२२२.	गांगसीण	शौनक	द्विवेदी	३	"
२२३.	गिलियाण	कौन्डिल्य	अग्निहोत्री	३	कौथुमी
२२४.	गाडेलिया	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी
२२५.	गिंडा	कपिल	जोषी	३	कौथुमी
२२६.	(गेंडा)	कपिल	जोषी	३	"
२२७.	गिलडा	कपिल	जोषी	३	"
२२८.	गुडोरिया	अत्री	शुक्ल	३	माध्यन्दिनी
२२९.	(गुंडा)	अत्री	शुक्ल	३	"
२३०.	गुराबा	भारद्वाज	पांडे	३	"
२३१.	(गुरावड)	भारद्वाज	पांडे	३	"
२३२.	गेन्दा	अंगिरा	जोषी	३	"
२३३.	गुलपुरा	वृहस्पती	जोषी	३	"
२३४.	गोल	कश्यप	तिवारी	३	"
२३५.	गोस्वामी	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
२३६.	गोधड़िया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
२३७.	गौड़गामिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
२३८.	गील	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
२३९.	गिलाण	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
२४०.	गोधडिया	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी
२४१.	गन्धवेवाल	गौतम	अग्निहोत्री	३	"
२४२.	गुड़पुरिया	काश्यप	तिवारी	३	"
२४३.	गनवारिया	अत्रिय	जोषी	३	"
२४४.	गौठवाल	परवृद्ध वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
२४५.	गोगाणी	परवृद्ध वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
२४६.	गोधडिया	परवृद्ध वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
२४७.	गंगावत	परवृद्ध वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
२४८.	गांधरा	कौशिक	व्यास	३	"
२४९.	गोरखपुरिया	कौशिक	व्यास	३	माध्यन्दिनी
२५०.	गारवाल	भारद्वाज	तिवारी	३	"
२५१.	गोग्याण	कौशिक	व्यास	३	"
२५२.	(गोज्ञान)	कौशिक	व्यास	३	"
२५३.	गील	कौशिक	व्यास	३	"
२५४.	गोधनिया	भार्गव	दीक्षित	४	"
२५५.	(गुवान्या)	भार्गव	दीक्षित	४	"
२५६.	गुहानिया	कौशिक	दीक्षित	४	"
२५७.	गोपीपाण	कात्यायन	त्रिपाठी	३	"
२५८.	गौरवालिवाल	कंक्षिल्य	पुरोहित	३	"
२५९.	गोरवाला	कौशिक	व्यास	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
२६०.	गंधसा	वलि	जोषी	५	माध्यन्दिनी
२६१.	गंगदाना	काशकृतस्नु	पुरोहित	३	वदवायन
२६२.	गालिवाल	काशकृतस्नु	पुरोहित	३	,,
२६३.	गिल्याण वशिष्ठ	कौंडीन्य	जोषी	३	माध्यन्दिनी
२६४.	गिलवाला	कृष्णवेण्यय	व्यास	३	वाजसनीय
२६५.	गोडवाला	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी
२६६.	गुलपारया	विष्णु	व्यास	३	,,
२६७.	गगमेरा	मोगिल	पुरोहित	३	,,
२६८.	गटगटा	गोमिल	जोषी	३	,,
२६९.	गुजरीका	गोलव	शुक्ल	३	,,
२७०.	गंगावासी	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	,,
२७१.	गोठवाल	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	,,
२७२.	गोज्ञान	कश्यप	जोषी	३	,,
२७३.	गोरवला	कौशिक	व्यास	३	,,
२७४.	गुदनिया	भारद्वाज	जोषी	३	,,
२७५.	घाघसाणी	कौशिक	व्यास	३	,,
२७६.	घटवारिया	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	,,
२७७.	घरवरा	वासुकी	व्यास	३	,,
२७८.	घाटिया	कश्यप	तिवारी	३	,,
२७९.	घोंडिदा	अंगिरा	जोषी	३	,,
२८०.	घोलिका	काणवायण	जोषी	५	,,
२८१.	घोरतपा	अत्रिय	जोषी	३	,,
२८२.	घुटौलिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	,,
२८३.	घाटसरिया	वत्स	मिश्र	३	,,

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
२८४.	घील	अत्रिय	जोषी	३	माध्यन्दिनी
२८५.	घूमर	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
२८६.	घरगढ़ा	कण्व	व्यास	३	"
२८७.	घुड़चड़िया	भारद्वाज	जोषी	३	–
२८८.	घुरावा	वशिष्ठ	जोषी	३	"
२८९.	चकोत्रे	कौशिक	अग्निहोत्री	३	आश्वलायन
२९०.	(चकता)	कौशिक	अग्निहोत्री	३	"
२९१.	चसवाका	भार्गव	दीक्षित	४	माध्यन्दिनी
२९२.	चलवारी	वाशिष्ठ	शुक्ल	३	"
२९३.	चान्द्रावतयो	कात्यायन	त्रिपाठी	३	"
२९४.	चांदीवाल	कौन्डिन्य	अग्निहोत्री	३	"
२९५.	चावणी	मौदगल्य	पुरोहित	३	"
२९६.	चाकोलिया	विश्वामित्र	व्यास	३	"
२९७.	चसवाका	भार्गव	जोषी	३	"
२९८.	चुलेट	अधमर्षण	जोषी	३	"
२९९.	चुलिवाल	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
३००.	चेदक	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	"
३०१.	चेतसरिया	चमदग्नि	श्रोत्रिय	३	"
३०२.	चौमुवाल	शांडील्य	अग्निहोत्री	३	कौथुमी
३०३.	चौमाल	हरितस	मिश्र	३	"
३०४.	चीतरवाल	कौशिक	व्यास	३	माध्यन्दिनी
३०५.	चान्दोल्या	वाक्षिल्य	पुरोहित	३	"
३०६.	चवद	बलि	जोषी	५	"
३०७.	चेरा	बलि	जोषी	५	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
३०८.	चमस्या	अत्रिय	जोषी	३	माध्यन्दिनी
३०९.	चोकचीला	काशकृतस्नु	पुरोहित	३	वदवायन
३१०.	चन्दवाल	अत्री	जोषी	३	कोटिन्य
३११.	चांटी	कृष्णवेण्यय	व्यास	३	वाजसनीय
३१२.	चाकलिया	विश्वामित्र	व्यास	३	माध्यन्दिनी
३१३.	(चाकलिवाल)	विश्वामित्र	व्यास	३	"
३१४.	चौहानवाल	वत्स	मिश्र	३	"
३१५.	चैतपुरिया	शांडिल्य	अग्निहोत्री	३	"
३१६.	चोहमेवाल	हरित	व्यास	३	"
३१७.	चौवेदीक्षित	अंगिरा	व्यास	३	"
३१८.	चम्हाल	हरित	व्यास	३	"
३१९.	चान्दोलिया प्रधान	पिप्पलायन	जोषी	३	"
३२०.	चौवेलाल	भारद्वाज	पांडे	३	"
३२१.	चुल्हेट	कौशिक	व्यास	३	"
३२२.	चुल्हीवाल	शांडिल्य	अग्निहोत्री	३	"
३२३.	चालीण	हरित	व्यास	३	"
३२४.	चलवारी	वाशिष्ठ	तिवारी	३	"
३२५.	चांदीवाल	कोंडिन्य	जोषी	३	"
३२६.	चौवे प्रधान	भारद्वाज	पांडे	३	"
३२७.	चौराणी	भारद्वाज	पांडे	३	"
३२८.	चिल्लाटा	सावर्णि	मिश्र	३	"
३२९.	चलखा	कण्व	व्यास	३	"
३३०.	चामडया	शांक्रत	जोषी	३	"
३३१.	चोरटा	सावर्ण	जोषी	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
३३२.	चान्दावतया	कात्यायन	जोषी	३	माध्यन्दिनी
३३३.	चान्दोल्या	कौशिक	व्यास	३	"
३३४.	चवदया	दालम्य	जोषी	३	"
३३५.	चटकाणी	वोधायन	व्यास	३	"
३३६.	चिमटोल्या	गोभिल	जोषी	३	"
३३७.	चनवरया	गोमिल	जोषी	३	"
३३८.	चकवाल	गोलव	शुक्ल	३	"
३३९.	चकेद	जैमिनिय	व्यास	३	"
३४०.	चौबेलाल	भारद्वाज	चतुर्वेदी	३	"
३४१.	चापस	वृद्धि	व्यास	३	"
३४२.	चैतसरिया	चमदग्नि	तिवारी	३	"
३४३.	चौबे प्रधान	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	"
३४४.	चन्दौलिया	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	"
३४५.	चुलकाणिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
३४६.	चुरोलिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
३४७.	चानगान	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
३४८.	चुलहट	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
३४९.	चुलकाणिमा	काश्यप	जोषी	३	माध्यन्दिनी
३५०.	चुनकटिया	कृष्णवेण्यय	व्यास	३	वाजसनीय
३५१.	चतुर्वेदी	कौशिक	व्यास	३	माध्यन्दिनी
३५२.	चान्दोलिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
३५३.	चौराणी	भारद्वाज	पांडे	३	"
३५४.	चावण्डया	भारद्वाज	पांडे	३	"
३५५.	चुल्हिवाल	शांडिल्य	तिवारी	३	कौथुमी

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
३५६.	(चुलीवाल)	शांडिल्य	तिवारी	३	कौथुमी
३५७.	चुल्हिवाल	अंगिरस	तिवारी	३	माध्यन्दिनी
३५८.	छनफारिया	कविस्त	वाजपेयी	३	माध्यन्दिनी
३५९.	(छनेरिया)	कविस्त	वाजपेयी	३	"
३६०.	छतरकला	काशकृतस्तु	पुरोहित	३	वदवायन
३६१.	छतरीवाल	गौतम	अग्निहोत्री	३	माध्यन्दिनी
३६२.	छिपारिया	पारासर	मिश्र	३	"
३६३.	छलिवाल	विश्वामित्र	व्यास	३	"
३६४.	छापरवाल	शौनन्द	द्विवेदी	३	"
३६५.	छीलवार	धनञ्जय	त्रिवेदी	३	कौथुमी
३६६.	छोडिहा	उपमन्यु	दीक्षित	३	माध्यन्दिनी
३६७.	छाछा	काशकृतस्तु	पुरोहित	३	वदवायन
३६८.	छोटिका	पूर्वातिथिनाम	त्रिपाठी	३	श्रीप्रीति
३६९.	छगसा	रेवण	पुरोहित	३	माध्यन्दिनी
३७०.	छोरीवाल	अनाब्रह्माक्ष	शुक्ल	३	"
३७१.	(छारीवाल)	अनाब्रह्माक्ष	शुक्ल	३	"
३७२.	छाजावत	अंगिरा	व्यास	३	"
३७३.	छनरिवाल	गौतम	अग्निहोत्री	३	"
३७४.	जलसुतिया	कविस्त	वाजपेयी	३	"
३७५.	(जसुतिया)	कविस्त	वाजपेयी	३	"
३७६.	जलवली	कांडिन्य	अग्निहोत्री	३	"
३७७.	जगथली	कौशिक	अग्निहोत्री	३	आश्वलायन
३७८.	जटोइया	गौतम	अग्निहोत्री	३	माध्यन्दिनी
३७९.	जलोथरिया	भारद्वाज	पांडे	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
३८०.	जगीमोड़	शौनक	द्विवेदी	३	माध्यन्दिनी
३८१.	जयपुरिया	वत्स	मिश्र	५	"
३८२.	(जपुरा)	वत्स	मिश्र	५	"
३८३.	जपटवाल	वृहस्पती	जोषी	३	"
३८४.	जाकिरवाल	कविस्त	वाजपेयी	३	"
३८५.	जावता	कौंडिन्य	अग्निहोत्री	३	"
३८६.	जाकाला	कौंडिन्य	अग्निहोत्री	३	"
३८७.	जाड़ीवाल	अत्री	शुक्ल	३	"
३८८.	जागदा	काशकृतस्नु	पुरोहित	३	वदवायन
३८९.	जाता	मौदगल्य	पुरोहित	३	माध्यन्दिनी
३९०.	जाणीपाल	वामदेव	जोषी	३	"
३९१.	जाड	शौनक	द्विवेदी	३	"
३९२.	जेवरिया	वत्स	मिश्र	३	"
३९३.	जेरवत	शौनक	द्विवेदी	३	"
३९४.	जोसी	कात्यायन	त्रिपाठी	३	"
३९५.	जाकेडया	काश्यप	दीक्षित	३	"
३९६.	जेनपाल	काश्यप	दीक्षित	३	"
३९७.	जाटोपीरोता	वाक्षिल्य	पुरोहित	३	"
३९८.	जमेघ	वाक्षिल्य	पुरोहित	३	"
३९९.	जाकेडया	काश्यप	जोषी	३	"
४००.	जयपटा	वलि	जोषी	५	"
४०१.	जेमला	अत्रिय	जोषी	३	"
४०२.	जोरीवाल	अत्रिय	जोषी	३	"
४०३.	जादावा	अत्रिय	जोषी	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
४०४.	जटुन्दा	अत्री	जोषी	३	कौंटिन्य
४०५.	जोपट	अत्री	जोषी	३	कौंटिन्य
४०६.	जरेवाल	पूर्वातिथिनाम	त्रिपाठी	३	श्रीभ्रीति
४०७.	जमीढ़ा	मालवनां	जोषी	३	माध्यन्दिनी
४०८.	जनावेद	मालवनां	जोषी	३	"
४०९.	जोलाल्या	वशिष्ठ	व्यास	३	"
४१०.	जावना	कौंडिन्य	जोषी	३	"
४११.	जाकाल्या	कौंडिन्य	जोषी	३	"
४१२.	जारजा	उपमन्यु	जोषी	३	"
४१३.	जगदीवा	धृत कौशिक	शुक्ल	३	"
४१४.	(जगदीवाला)	धृत कौशिक	शुक्ल	३	"
४१५.	जेरदा	वैयाग्रपद्य	व्यास	मेक प्रवर	"
४१६.	जोरिया	राहू	जोषी	३	"
४१७.	जुरेजा	शोरी	पुरोहित	३	"
४१८.	जाधोरिया	चन्द्रायन	जोषी	३	"
४१९.	जामुनिया	मांडल्य	जोषी	३	"
४२०.	जेवरीया	मित्रा वरुण	स्वामी	३	"
४२१.	जगट	वाक्षिल्य	पुरोहित	३	"
४२२.	जगरी	जावाली	आचार्य	३	"
४२३.	जफरीवाल	दरमायन	व्यास	२	"
४२४.	जगवाली	जन्हु	व्यास	३	"
४२५.	जारीपाल	मौनस	स्वामी	२	"
४२६.	जवरी	तंत्री	व्यास	३	"
४२७.	जंगीमोड	तंत्री	व्यास	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
४२८.	जेरवत	शौनक	जोषी	२	माध्यन्दिनी
४२९.	जगचली	कांचन	व्यास	३	"
४३०.	जुवरदा	वैयाग्रपद्य	व्यास	मैक प्रवर	"
४३१.	जोसिया	शक्ति	जोषी	३	"
४३२.	जामंदया	मांडल्य	जोषी	३	"
४३३.	जपंत	अव्य	व्यास	३	"
४३४.	जैत्सरावत	कौशिक	व्यास	३	"
४३५.	जगवाल	भारद्वाज	पांडे	३	"
४३६.	जेमनिया	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	"
४३७.	जलाणिया	अत्रिय	जोषी	३	"
४३८.	जिन्दिया	अत्रिय	जोषी	३	"
४३९.	जैमन	भारद्वाज	जोषी	३	"
४४०.	झूड़िया	गौतम	अग्निहोत्री	३	"
४४१.	झाड़ोलिया प्रधान	गौतम	अग्निहोत्री	३	"
४४२.	झाड़ोलिया	अत्रिय	जोषी	३	"
४४३.	झीमरिया	वत्स	मिश्र	३	"
४४४.	झमन	वत्स	मिश्र	३	"
४४५.	झड सैना	परासर	मिश्र	३	"
४४६.	झाड़ोदिया	वाशिष्ठ	जोषी	३	"
४४७.	झड़सैया	पारासर	मिश्र	३	"
४४८.	झीमरिया	कौशिक	व्यास	३	"
४४९.	झाडोदिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
४५०.	झारोलिया	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	"
४५१.	झुरनाटा	वामदेव	जोषी	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
४५२.	झकदु	मालवनां	जोषी	३	माध्यन्दिनी
४५३.	झुदपाण	मित्रावरुण	स्वामी	३	"
४५४.	झीमरिया	चन्द्रायण	जोषी	३	"
४५५.	झनुथरा	भारद्वाज	पांडे	३	"
४५६.	झर्मरिया	वशिष्ठ	जोषी	३	"
४५७.	(झर्मरपुरिया)	वाशिष्ठ	जोषी	३	"
४५८.	टडपाडे	अत्रिय	जोषी	३	"
४५९.	टाटोपर्या	धनञ्जय	त्रिवेदी	३	कौथुमी
४६०.	टिटवारिया	भार्गव	दीक्षित	४	माध्यन्दिनी
४६१.	(टिलावत)	भार्गव	दीक्षित	४	"
४६२.	टोड़ीवाल	धनञ्जय	त्रिवेदी	३	कौथुमी
४६३.	टिकणायक	कृष्णावेण्यय	व्यास	३	वाजसनीय
४६४.	टाटोपरो	धनञ्जय	जोषी	३	यजुर्वंसी
४६५.	टिटोर्‍या	आलम्बायन	जोषी	३	माध्यन्दिनी
४६६.	टापुन्यामित्र	जन्हु	व्यास	३	"
४६७.	टिलावत	वशिष्ठ	शुक्ल	२	कौथुमी
४६८.	टडोलिया	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी
४६९.	टंट प्रधान	भारद्वाज	पांडे	३	"
४७०.	ठगा	कृष्णवेण्यय	व्यास	३	वाजसनीय
४७१.	ठोरिया	पूर्णातिथिनाम	त्रिपाठी	३	श्रीभ्रीति
४७२.	ठका	दरभायण	व्यास	२	माध्यन्दिनी
४७३.	ठिकरिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
४७४.	डोरंडवाल	कौशिक	अग्निहोत्री	३	आश्वस्यायन
४७५.	डोल्या	गौतम	अग्निहोत्री	३	माध्यन्दिनी

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
४७६.	डकन्यास	वृद्धि	व्यास	३	माध्यन्दिनी
४७७.	डाकोल्या	वृहस्पती	जोषी	३	"
४७८.	डाचोल्या	कश्यप	तिवारी	३	"
४७९.	डिडवान्या	वाशिष्ठ	शुक्ल	३	"
४८०.	डोरीवाल	वरवंगन	जोषी	३	"
४८१.	(डोरवाल)	वरवंगन	जोषी	३	"
४८२.	डोल्या	सोपायन	मिश्र	५	"
४८३.	डिगलवाल	रेवण	पुरोहित	३	"
४८४.	डासी	मित्रावरुण	स्वामी	३	"
४८५.	डबडा	वोधायन	व्यास	३	"
४८६.	डिबका	कांचन	व्यास	३	"
४८७.	डोडराव	शक्ति	जोषी	३	"
४८८.	डसलियर	आलवायन	जोषी	३	"
४८९.	डीडवानिया	अत्रिय	जोषी	३	"
४९०.	डोकवाल	कौशिक	व्यास	३	"
४९१.	डडवाड्या	भारद्वाज	पांडे	३	"
४९२.	डोरवाल	भारद्वाज	पांडे	३	"
४९३.	डोडवाडिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
४९४.	डुगरपुरिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
४९५.	डडवालिये	भृगु	व्यास	३	"
४९६.	डबोधिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
४९७.	डोल्या	भारद्वाज	पांडे	३	"
४९८.	डिगथालिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
४९९.	ढ़ीगथलिया	अत्रिय	जोषी	३	माध्यन्दिनी

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
५००.	ढ़ांचोलिया	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी
५०१.	ढ़करण	पारासर	मिश्र	३	"
५०२.	ढ़ंलयाल्या	कात्यायन	त्रिपाठी	३	"
५०३.	ढ़ंड	सोपायन	मिश्र	५	"
५०४.	ढ़ीलिवाल	सोपायन	मिश्र	५	"
५०५.	ढ़ंगी	कौंडिन्य	अग्निहोत्री	३	"
५०६.	ढ़ंकरड	पारासर	मिश्र	३	"
५०७.	ढ़ंलवाण्या	कात्यायन	त्रिपाठी	३	"
५०८.	ढ़ांका	कौशिक	अग्निहोत्री	३	आश्वालायन
५०९.	ढ़ांचोलिया	वृहस्पती	जोषी	३	माध्यन्दिनी
५१०.	(ढ़ांचोल्या)	वृहस्पती	जोषी	३	"
५११.	ढ़ंढ़ीर	धनञ्जय	तिवारी	३	यजुवंसी
५१२.	ढ़ंग	अनाब्राह्माक्ष	शुक्ल	३	माध्यन्दिनी
५१३.	ढ़ंढ़	अत्रिय	जोषी	३	"
५१४.	तुसामिया	अत्री	शुक्ल	३	कौथुमी
५१५.	तपोधश	अगस्ता	व्यास	३	माध्यन्दिनी
५१६.	तिगडाणिया	कौशिक	व्यास	३	"
५१७.	तुनगरिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
५१८.	तालड	भारद्वाज	पांडे	३	"
५१९.	तो:स्याण	भारद्वाज	पांडे	३	"
५२०.	तिगणियात	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	"
५२१.	तायगा तिवाड़ी	सांस्कृत	पांडे	३	"
५२२.	तावावत	हारी	व्यास	३	"
५२३.	तलवारिया	कात्यायन	त्रिपाठी	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
५२४.	तासरवाल	कौंडिन्य	अग्निहोत्री	३	माध्यन्दिनी
५२५.	तेनगुरिया	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	"
५२६.	(त्रीगुणायक)	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	"
५२७.	तेरसका	धनञ्जय	तिर्वेदी	३	कौथुमी
५२८.	तोंदवाल	कौंडिन्य	अग्निहोत्री	३	माध्यन्दिनी
५२९.	तिडोल्या	वशिष्ठ	व्यास	३	"
५३०.	तणतण	विष्णु	व्यास	३	"
५३१.	तदावत	हरि	व्यास	३	"
५३२.	तिगुणायत	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	"
५३३.	तुसामरिया	अत्रिय	जोषी	३	"
५३४.	तुन्दवाल	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
५३५.	तिलोंडिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
५३६.	तिवाड़ी	सांकृत्य	तिवारी	३	"
५३७.	तूंगणायक	भारद्वाज	मिश्र	३	माध्यन्दिनी
५३८.	ताकलन	गौतम	गोस्वामी	३	"
५३९.	थमीका	जैमिनिय	व्यास	३	माध्यन्दिनी
५४०.	थानेसरिया	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	"
५४१.	थानेसरिया	काश्यप	तिवारी	३	"
५४२.	थनकटा	भारद्वाज	पांडे	३	"
५४३.	दरधु	वाशिष्ठ	शुक्ल	३	"
५४४.	दवलत	वृहस्पती	जोषी	३	"
५४५.	ददभरिया	शांडिल्य	अग्निहोत्री	३	कौथुमी
५४६.	दांतला	कौशिक	अग्निहोत्री	३	आश्वलायन
५४७.	दारोला	कौशिक	अग्निहोत्री	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
५४८.	दालपाणी	घृतकौशिक	शुक्ल	३	माध्यन्दिनी
५४९.	दीक्षित	काणवायन	जोषी	३	"
५५०.	दुजिमेका	भार्गव	जोषी	३	"
५५१.	दादरा	वृहस्पती	जोषी	३	माध्यन्दिनी
५५२.	दिपाल	मौदगल्य	पुरोहित	३	"
५५३.	दीक्षित	वाशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
५५४.	दूजिमेका	भार्गव	दीक्षित	४	माध्यन्दिनी
५५५.	दुलारिया	भार्गव	दीक्षित	४	"
५५६.	दृदयो	धनञ्जय	त्रिवेदी	३	"
५५७.	दूदोलिया	सांकृत	पांडे	३	"
५५८.	(दौलिया)	सांकृत	पांडे	३	"
५५९.	देवसोरी	मौदगल्य	पुरोहित	३	"
५६०.	देगड़िया	विश्वामित्र	व्यास	३	"
५६१.	दोराड़	अंगिरा	जोषी	३	"
५६२.	(दरड़)	अंगिरा	जोषी	३	"
५६३.	द्विवेदी प्रधान	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	"
५६४.	द्वजाणिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
५६५.	दाना	कौशिक	अग्निहोत्री	३	आश्वलायन
५६६.	दुबे	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी
५६७.	दुलिणहट	भारद्वाज	पांडे	३	"
५६८.	दांतोलिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
५६९.	दीक्षित कंड	अंगिरा	जोषी	३	"
५७०.	दोलत	वृहस्पती	जोषी	३	"
५७१.	दामानील	भारद्वाज	पांडे	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
५७२.	दिवाल	अंगिरा	जोषी	३	माध्यन्दिनी
५७३.	दधीया	कुशिक	व्यास	३	"
५७४.	दिगत	वलि	जोषी	५	"
५७५.	दुपटया	अत्रिय	जोषी	३	माध्यन्दिनी
५७६.	दोलत	अत्रिय	जोषी	३	कौटिन्य
५७७.	दिवंडा	कृष्णवेण्यय	व्यास	३	वाजसनीय
५७८.	देविल	कृष्णवेण्यय	व्यास	३	वाजसनीय
५७९.	दामोदा	पूर्वातिथिनाम	त्रिपाठी	३	श्रीप्रीति
५८०.	दगड	अंगिरा	जोषी	३	माध्यन्दिनी
५८१.	ददबेचा	मालवनां	जोषी	३	"
५८२.	ददभरिया	शांडिल्य	जोषी	३	कौथुमी
५८३.	द्रविडा	अगस्त	जोषी	३	माध्यन्दिनी
५८४.	दिलिपाण	धृतकौशिक	शुक्ल	३	"
५८५.	दादाभाई	जावाली	आचार्य	३	"
५८६.	देवमोर	कांचन	व्यास	३	"
५८७.	दरवाजा	अव्य	व्यास	३	"
५८८.	ददरी	वैयाग्रपद्य	व्यास	मेक प्रवर	"
५८९.	दूदौल्या	सांकृत्य	व्यास	३	"
५९०.	द्विवेदी प्रधान	परवृद्ध वशिष्ठ	व्यास	३	"
५९१.	देवलिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
५९२.	देवाचिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
५९३.	दोरलिया	गौतम	अग्निहोत्री	३	माध्यन्दिनी
५९४.	दुलोणिया	गौतम	अग्निहोत्री	३	"
५९५.	दोहलिया	गौतम	अग्निहोत्री	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
५९६.	दिपाल	मुदगल	पुरोहित	३	वाजसनीय
५९७.	धरड	भारद्वाज	मिश्र	३	माध्यन्दिनी
५९८.	धरड़	अत्री	शुक्ल	३	"
५९९.	(धारूड)	अत्री	शुक्ल	३	माध्यन्दिनी
६००.	धरिडवाल	उपमन्यु	दीक्षित	३	"
६०१.	धरवाणी	कपिल	जोषी	३	"
६०२.	धारंजाणा	उपमन्यु	दीक्षित	३	"
६०३.	धावंड़ा	कौटिन्य	अग्निहोत्री	३	"
६०४.	धारका	उपमन्यु	दीक्षित	३	"
६०५.	धीमरवाल	कात्यायन	त्रिपाठी	३	"
६०६.	धृवपाल्या	कश्यप	तिवारी	३	"
६०७.	धोकधाणी	कात्यायण	त्रिपाठी	३	"
६०८.	धरगंडा	कण्व	व्यास	३	"
६०९.	धाकलाणी	सावर्ण	जोषी	३	"
६१०.	धोरू	कविस्त	वाजपेयी	३	"
६११.	धोल	कौंडिन्य	अग्निहोत्री	३	"
६१२.	धौलपुरिया	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	"
६१३.	धौरमैया	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	"
६१४.	धौरेटिया	वत्स	मिश्र	५	"
६१५.	धामोल्या	कौशिक	व्यास	३	"
६१६.	धगजाया	कौशिक	व्यास	३	"
६१७.	धन्तलिया	भारद्वाज	जोषी	३	"
६१८.	धमुकाल्या	बन्धुल	जोषी	३	माध्यन्दिनी
६१९.	धूमर	वाशिष्ठ	व्यास	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
६२०.	धरगंड	कण्व	व्यास	३	माध्यन्दिनी
६२१.	धरदा	अगस्त	जोषी	३	"
६२२.	धाबुधुका	केशव	जोषी	३	"
६२३.	धारवाग	शोरी	पुरोहित	३	"
६२४.	धौरी	शोरी	पुरोहित	३	"
६२५.	धारमोर	मांडल्य	जोषी	३	"
६२६.	धानाणी	कांचन	व्यास	३	"
६२७.	धीधरीका	अनाब्रह्माक्ष	शुक्ल	३	"
६२८.	धूरीवाल	अव्य	व्यास	३	"
६२९.	धोलिका	वासुकी	व्यास	२	"
६३०.	धरवर	वासुकी	व्यास	२	"
६३१.	धोसीका	वासुकी	व्यास	२	"
६३२.	धामणीमिश्र	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
६३३.	धुचोलिया	अत्रिय	शुक्ल	३	माध्यन्दिनी
६३४.	धमुणिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
६३५.	धडे	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी
६३६.	धूपला	भारद्वाज	पांडे	३	"
६३७.	धरंल	भारद्वाज	पांडे	३	"
६३८.	धर्मपुरिया	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	"
६३९.	धगलरया	अत्रिय	जोषी	३	"
६४०.	धारणादेव	सावर्णि	मिश्र	३	"
६४१.	धनकारिया	कविस्त	वाजपेयी	३	"
६४२.	धरेसराजोषी	गौतम	जोषी	३	"
६४३.	नकरीवाल	गविष्ठर	जोषी	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
६४४.	नावीजा	अष्टावक्र	जोषी	३	माध्यन्दिनी
६४५.	नडगावत	संरवना	जोषी	३	,,
६४६.	नर्रऊआ	गर्ग	दीक्षित	३	पिप्पलायनी
६४७.	नरवरिय	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	माध्यन्दिनी
६४८.	निरंगा	कांचन	व्यास	३	,,
६४९.	नदवाणी	वत्स	मिश्र	३	,,
६५०.	नगीया	वृहस्पती	जोषी	३	,,
६५१.	नारनौलिया	कश्यप	तिवारी	३	,,
६५२.	नाकला	कौडिन्य	अग्निहोत्री	३	,,
६५३.	नागौरिया	कौंडान्य	अग्निहोत्री	३	,,
६५४.	नागावाणा	कौशिक	व्यास	३	,,
६५५.	नादावतिया	कौशिक	अग्निहोत्री	३	,,
६५६.	नागपाण	जावाली	आचार्य	३	,,
६५७.	नाटा	धनञ्जय	त्रिवेदी	३	,,
६५८.	(नाठा)	धनञ्जय	त्रिवेदी	३	,,
६५९.	नादाणी	वशिष्ठ	शुक्ल	३	,,
६६०.	निदामपुरिया	कविस्त	वाजपेयी	३	,,
६६१.	नुनेरिया	शांडिल्य	अग्निहोत्री	३	,,
६६२.	नेठक	वाशिष्ठ	शुक्ल	३	,,
६६३.	नोली	उपमन्यु	दीक्षित	३	,,
६६४.	नोस्या	मौदगल्य	पुरोहित	३	,,
६६५.	नोंहिया	वत्स	मिश्र	३	,,
६६६.	नोटोदा	वृहस्पती	जोषी	३	,,
६६७.	नौगइया	भारद्वाज	पांडे	३	,,

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
६६८.	नारैया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
६६९.	निगरवाल	सुपर्ण	व्यास	३	माध्यन्दिनी
६७०.	नातवाल	भारद्वाज	पांडे	३	"
६७१.	नागरवाल	वत्स	मिश्र	३	माध्यन्दिनी
६७२.	(नंगुरवाल)	वत्स	मिश्र	३	"
६७३.	नतोदया	वृहस्पती	जोषी	३	"
६७४.	नरवरीवाल	अत्री	जोषी	३	कौटिन्य
६७५.	नेणक	वाशिष्ठ	तिवारी	३	माध्यन्दिनी
६७६.	नाकला	वशिष्ठ	व्यास	३	"
६७७.	नाग	कण्व	व्यास	३	"
६७८.	नंगा	अगस्ति	जोषी	३	"
६७९.	नोरजली	उपमन्यु	जोषी	३	"
६८०.	नोली	उपमयु	जोषी	३	"
६८१.	नीक	धृत कौशिक	शुक्ल	३	"
६८२.	नदवाणी	वात्सना	जोषी	५	"
६८३.	नोरका	आलम्वायन	जोषी	३	"
६८४.	नाथोलिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
६८५.	नगटयाल	मित्रावरुण	स्वामी	३	माध्यन्दिनी
६८६.	नादावतया	कौशिक	व्यास	३	"
६८७.	नरदाणी	केशव	जोषी	३	"
६८८.	नवदीया	सावर्ण	जोषी	३	"
६८९.	नरवडा	अनाब्रह्माक्ष	शुक्ल	३	"
६९०.	नावदया	सोभराज	जोषी	३	"
६९१.	नरंकोडा	शांक्रत	जोषी	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
६९२.	नागपत्र	कौशिक	व्यास	३	माध्यन्दिनी
६९३.	नरडा	काणवायन	जोषी	५	,,
६९४.	नोपत	कौशिक	जोषी	३	,,
६९५.	निगरवाल	कौशिक	जोषी	३	,,
६९६.	नानिया	कौशिक	जोषी	३	,,
६९७.	नल	कौशिक	जोषी	३	,,
६९८.	नोदा	वाक्षिल्य	पुरोहित	३	,,
६९९.	नेण्या	वाक्षिल्य	पुरोहित	३	,,
७००.	नंगावत	वालि	जोषी	५	,,
७०१.	नरया	सावर्णि	मिश्र	३	,,
७०२.	नगचारी	अनाब्रह्माक्ष	शुक्ल	३	,,
७०३.	नावंडा	तंत्री	व्यास	३	,,
७०४.	नरवाबा	अव्य	व्यास	३	,,
७०५.	नरकिया	जैमिनिय	व्यास	३	,,
७०६.	नामसोरा	दालव्य	जोषी	३	,,
७०७.	नड्का	वैयाघ्रपद्य	व्यास	मेकप्रवर	,,
७०८.	नारूडा	शौनक	व्यास	३	,,
७०९.	नौताणिया	गौतम	अग्निहोत्री	३	,,
७१०.	नेघलिया	आत्री	शुक्ल	३	,,
७११.	निर्मल	कौशिक	अग्निहोत्री	३	आश्वलायन
७१२.	नागवाण	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी
७१३.	नरेडा	भारद्वाज	जोषी	३	,,
७१४.	न्यायस्थानी	भारद्वाज	पांडे	३	,,
७१५.	निरथलिया	भारद्वाज	पांडे	३	,,

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
७१६.	निगमबोधिया	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी
७१७.	नेतवालिया	भारद्वाज	जोषी	३	"
७१८.	नातवाला	भारद्वाज	जोषी	३	"
७१९.	नरहेड़वाल	भारद्वाज	जोषी	३	"
७२०.	निरालिया	भारद्वाज	जोषी	३	"
७२१.	नाड़	भारद्वाज	जोषी	३	"
७२२.	नगुवाल	सुपर्ण	व्यास	३	"
७२३.	निगरवाल	सुपर्ण	व्यास	३	"
७२४.	नगुरा	सुपर्ण	व्यास	३	"
७२५.	नरवलिया	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	"
७२६.	नैचारिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
७२७.	नारनोलिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
७२८.	नागवाण	अत्रिय	शुक्ल	३	"
७२९.	नाकड़े	कौशिक	अग्निहोत्री	३	आश्वलायन
७३०.	नागवत्ण	वत्स	मिश्र	३	माध्यन्दिनी
७३१.	नंगुरवाल	शांडिल्य	जोषी	३	कौथुमी
७३२.	नागोल्या	शक्ति	जोषी	३	माध्यन्दिनी
७३३.	नानोल्या	शक्ति	जोषी	३	"
७३४.	नेवेटोया	शक्ति	जोषी	३	"
७३५.	नेकपाल	चन्द्रायन	जोषी	३	"
७३६.	नुणीवाल	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	"
७३७.	नारेला	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
७३८.	नौताणिया	गौतम	व्यास	३	माध्यन्दिनी
७३९.	नाथोलिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
७४०.	नालिपालिय	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
७४१.	नुन्दवाल	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
७४२.	पचरंग्या	गौतम	अग्निहोत्री	३	माध्यन्दिनी
७४३.	पडिलिया	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	माध्यन्दिनी
७४४.	पंचलाणि	पारासर	मिश्र	३	"
७४५.	पंचगुणी	भारद्वाज	पांडे	३	"
७४६.	पंचगुणी	भार्गव	जोषी	३	"
७४७.	पानडया	वात्सना	जोषी	५	"
७४८.	पत्सारिया	वत्स	मिश्र	३	"
७४९.	पंचलग्या	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
७५०.	पंचार्या	सांकृत	पांडे	३	"
७५१.	पंड्या	सोपायन	मिश्र	५	"
७५२.	पासछोडिया	कात्यायन	त्रिपाठी	३	"
७५३.	पागोल्या	मौदगल्य	पुरोहित	३	"
७५४.	पात्रालिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
७५५.	पहाकतारी	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
७५६.	पतालिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
७५७.	पटोदिया	गौतम	अग्निहोत्री	३	माध्यन्दिनी
७५८.	पाण्डयाणा	गौतम	अग्निहोत्री	३	"
७५९.	पांतिए	गौतम	अग्निहोत्री	३	"
७६०.	पचालिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
७६१.	पांडयाण	अत्रिय	शुक्ल	३	कौथुमी
७६२.	पिलोदा	अगस्त	दीक्षित	३	वदवायन
७६३.	पंचलगिया	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
७६४.	पाठक	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी
७६५.	पितरोत	भारद्वाज	पांडे	३	,,
७६६.	परासिया	भारद्वाज	जोषी	३	,,
७६७.	पीठवाल	भारद्वाज	जोषी	३	,,
७६८.	पेटवाडिया	भारद्वाज	जोषी	३	,,
७६९.	पीहुवाल	भारद्वाज	जोषी	३	,,
७७०.	पलड़िया	भारद्वाज	पांडे	३	,,
७७१.	पान्डीया	भारद्वाज	पांडे	३	,,
७७२.	पंचोली	भारद्वाज	पांडे	३	,,
७७३.	पावटा	भारद्वाज	पांडे	३	,,
७७४.	पाचोलिया	शांडिल्य	जोषी	३	कौथुमी
७७५.	पर्वती	शाण्डिल्य	जोषी	३	,,
७७६.	पाठक	शाण्डिल्य	जोषी	३	,,
७७७.	पिलाण	वशिष्ठ	शुक्ल	३	,,
७७८.	पिडाणेवरलिया	कौशिक	अग्निहोत्री	३	अश्वलायन
७७९.	पवालिया	कौशिक	अग्निहोत्री	३	,,
७८०.	पानडया	वत्स	मिश्र	३	माध्यन्दिनी
७८१.	पिपरोटा	काशकृतस्तु	पुरोहित	३	,,
७८२.	(पारोटया)	काशकृतस्तु	पुरोहित	३	,,
७८३.	पीपोल्या	काशकृतस्तु	पुरोहित	३	,,
७८४.	पैगरिया	धनञ्जय	त्रिवेदी	३	,,
७८५.	पोत	वृहस्पती	जोषी	३	,,
७८६.	पोपल्या	शौनक	द्विवेदी	३	,,
७८७.	परत्रु	काश्यप	दीक्षित	३	,,

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
७८८.	परीतु	बलि	जोषी	५	माध्यन्दिनी
७८९.	पतिया	बलि	जोषी	५	"
७९०.	पुरोहितका	मौदगल्य	पुरोहित	३	"
७९१.	पलीखाता	मालवनां	जोषी	३	"
७९२.	पोरटया	शोरी	पुरोहित	३	"
७९३.	पुलटेरया	कशव	जोषी	३	"
७९४.	पलस्ति	कर्ण	जोषी	३	"
७९५.	पीपल्या	शौनक	जोषी	३	"
७९६.	पगोल्वा	मौदगल्य	देव शर्मा	३	"
७९७.	पादुदिया	शानक	जोषी	३	"
७९८.	पीलोदिया	वृद्धि	व्यास	३	"
७९९.	पानरवाल	शक्ति	जोषी	३	"
८००.	पिडिपाप्या	गौतम	अग्निहोत्री	५	"
८०१.	पिडारा	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	"
८०२.	पिलोदिया	वशिष्ठ	जोषी	३	"
८०३.	फुलड़िया	अत्रिय	जोषी	३	"
८०४.	फुटवा	कौशिक	व्यास	३	"
८०५.	फलोड़िया	सांकृत	जोषी	३	"
८०६.	फवरिया	सांकृत	जोषी	३	"
८०७.	फठवाडिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
८०८.	फतेहपुरिया	कश्यप	तिवारी	३	"
८०९.	फरेट	पूर्वातिथिनाम	त्रिपाठी	३	"
८१०.	फरमानिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
८११.	फटवाडिया व्यास	कौशिक	अग्निहोत्री	३	अश्वलायन

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
८१२.	फटवाडिया	ओसेश्वर	जोषी	३	अश्वलायन
८१३.	फटवाड्या	भारद्वाज	व्यास	३	माध्यन्दिनी
८१४.	बाईतिका	विष्णु	व्यास	३	,,
८१५.	बालधना	गविष्ठर	जोषी	३	माध्यन्दिनी
८१६.	बिवौलिया	कविस्त	वाजपेयी	३	,,
८१७.	बरसिया	कौशिक	व्यास	३	,,
८१८.	बाझड़ा	अगस्त	जोषी	३	,,
८१९.	बबेरवाल	कौंडिन्य	अग्निहोत्री	३	,,
८२०.	विरहठवाल	कौंडिन्य	अग्निहोत्री	३	,,
८२१.	बनवारिया	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	,,
८२२.	(बनावड़िया)	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	,,
८२३.	बलमकर	मौदगल्य	पुरोहित	३	,,
८२४.	बबंदा	मौदगल्य	पुरोहित	३	,,
८२५.	बवीया	अंगिरा	जोषी	३	,,
८२६.	बड़का	मौदगल्य	पुरोहित	३	,,
८२७.	बहरवाल	वत्स	मिश्र	३	,,
८२८.	बरुणा	कश्यप	तिवारी	३	,,
८२९.	बदेरा	कपिल	जोषी	३	,,
८३०.	बशिष्ठ	धृतकौशिक	शुक्ल	३	,,
८३१.	बबु	हारी	व्यास	३	,,
८३२.	बत्सारा	काशकृतस्तु	पुरोहित	३	,,
८३३.	बिसोर	कर्ण	जोषी	३	,,
८३४.	बण्या	वरवंगन	जोषी	३	,,
८३५.	बछगइया	कविस्त	वाजपेयी	३	,,

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
८३६.	बस्तीवाल	कौशिक	अग्निहोत्री	३	अश्वालायन
८३७.	विश्वम्भरा	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी
८३८.	बरनैया	भारद्वाज	पांडे	३	"
८३९.	बीहरिया	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी
८४०.	बाकोलिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
८४१.	बाहरिया	भारद्वाज	जोषी	३	"
८४२.	बिडाहट	भारद्वाज	जोषी	३	"
८४३.	बड़थालिया	भारद्वाज	जोषी	३	"
८४४.	बुंभरा	भारद्वाज	जोषी	३	"
८४५.	बड़वालिया	भारद्वाज	जोषी	३	"
८४६.	बागला	भारद्वाज	जोषी	३	"
८४७.	बीमा	भारद्वाज	जोषी	३	"
८४८.	बाक्षा	भारद्वाज	जोषी	३	"
८४९.	बटोले	भारद्वाज	जोषी	३	"
८५०.	बसूडवाल	जमदग्नि	जोषी	३	"
८५१.	बलमिया	वत्स	मिश्र	३	"
८५२.	बहडोलिया	वत्स	मिश्र	३	"
८५३.	बोरा	वत्स	मिश्र	३	"
८५४.	बावलिया	मौदगल्य	पुरोहित	३	"
८५५.	बागडोलिया	पारासर	मिश्र	३	"
८५६.	बनूडवाल	शांडिल्य	अग्निहोत्री	३	"
८५७.	बबेरवाल	अंगिरा	व्यास	३	"
८५८.	बरूणवाल	शांडिल्य	अग्निहोत्री	३	माध्यन्दिनी
८५९.	ब्रह्मवेदिया	कृष्णवेण्यय	व्यास	३	वजयनीय

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
८६०.	बिजनोटिया	वशिष्ठ	जोषी	३	माध्यन्दिनी
८६१.	बगेरवाल	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
८६२.	बासुखेड़ा	अत्री	शुक्ल	३	"
८६३.	बसेटिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
८६४.	बासोल्या	गर्ग	दीक्षित	३	"
८६५.	बछीवाल	विश्वामित्र	व्यास	३	"
८६६.	बबड़	वृहस्पती	जोषी	३	"
८६७.	बहिनीया	भार्गव	दीक्षित	३	"
८६८.	बरथौनिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
८६९.	बढ़ौलिया	जैमिनिं	श्रोत्रिय	३	"
८७०.	बादश	अत्री	शुक्ल	३	"
८७१.	बावणोधा	कौशिक	अग्निहोत्री	३	"
८७२.	वागोलवाल	काशकृतस्नु	पुरोहित	३	वदवायन
८७३.	बादरीवाल	काशकृतस्नु	पुरोहित	३	"
८७४.	बाबरवाल	अत्री	शुक्ल	३	माध्यन्दिनी
८७५.	बाबलिया	धनञ्जय	त्रिवेदी	३	"
८७६.	बामोरिया	धनञ्जय	त्रिवेदी	३	"
८७७.	बाघौरिया	भार्गव	दीक्षित	३	"
८७८.	बागोर्या	भार्गव	दीक्षित	३	"
८७९.	बांदोलिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
८८०.	वसिष्ठ	भारद्वाज	शुक्ल	३	"
८८१.	बवेरचाल	तंत्री	व्यास	३	"
८८२.	बासोधा	यमदग्नि	श्रोत्रिय	३	"
८८३.	बासोड़वाल	यमदग्नि	श्रोत्रिय	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
८८४.	बारल्या	सांकृत्य	पांडे	३	माध्यन्दिनी
८८५.	बखेड़ा	अत्रिय	जोषी	३	''
८८६.	बड़ीवाल	अत्रिय	जोषी	३	''
८८७.	व्यास	कृष्णवेण्यय	व्यास	३	वजसनीय
८८८.	विढ़ाट	कौशिक	व्यास	३	माध्यन्दिनी
८८९.	बिषंकरिया	कौशिक	व्यास	३	''
८९०.	ब्रजवाल	कौशिक	व्यास	३	''
८९१.	बगरहटा	कौशिक	व्यास	३	''
८९२.	बाहूनदिया	कौशिक	व्यास	३	''
८९३.	बाघडोलिया	कौशिक	अग्निहोत्री	३	आश्वलायन
८९४.	वृदाणिया	कौशिक	अग्निहोत्री	३	''
८९५.	बराड़	कौशिक	अग्निहोत्री	३	''
८९६.	विजयचारण	कौशिक	अग्निहोत्री	३	''
८९७.	वाह्याया	कौशिक	अग्निहोत्री	३	''
८९८.	बुरा	कौशिक	अग्निहोत्री	३	''
८९९.	वामणोलिया	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी
९००.	वियाला	भारद्वाज	पांडे	३	''
९०१.	वींवाल	भारद्वाज	मिश्र	३	''
९०२.	विजचाण	भारद्वाज	पांडे	३	''
९०३.	बवेर	भारद्वाज	जोषी	३	''
९०४.	बड़ीवाल	भारद्वाज	पांडे	३	''
९०५.	विजणेट	भारद्वाज	पांडे	३	''
९०६.	बावेलिया	भारद्वाज	पांडे	३	''
९०७.	बालोचिया	भारद्वाज	पांडे	३	''

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
९०८.	व्योरिया	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी
९०९.	विजयवाणी	भारद्वाज	पांडे	३	"
९१०.	बासोसिया	वशिष्ठ	व्यास	३	"
९११.	बावल्या	उपमन्यु	दीक्षित	३	"
९१२.	बावनया	अत्री	शुक्ल	३	"
९१३.	बारोट्या	अत्री	शुक्ल	३	"
९१४.	बिचौलिया	कविस्त	वाजपेयी	३	"
९१५.	बीसूवाल	वत्स	मिश्र	३	"
९१६.	बींवाल	वत्स	मिश्र	३	"
९१७.	बुवाल़	यमदग्नि	श्रोत्रिय	३	"
९१८.	बेण	मौदगल्य	पुरोहित	३	"
९१९.	बोगड़	अत्री	शुक्ल	३	"
९२०.	बोहरा	धनञ्जय	त्रिवेदी	३	"
९२१.	बीयाला	अंगिरा	जोषी	३	"
९२२.	बावणोदा	कौशिक	व्यास	३	"
९२३.	बड़व्यास	कौशिक	व्यास	३	"
९२४.	बिसमरा	बन्थुल	जोषी	३	"
९२५.	बखैया	वलि	जोषी	३	"
९२६.	बिवाल	अत्रिय	जोषी	३	"
९२७.	बिवाल	अंगिरा	जोषी	३	"
९२८.	बारोटया	अत्रिय	जोषी	३	"
९२९.	बुवाल	यमदग्नि	तिवारी	३	"
९३०.	बावलिवाल	काशकृतस्नु	पुरोहित	३	वदवायन
९३१.	बीरहीतका	काशकृतस्नु	पुरोहित	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
९३२.	बोदायला	वृहस्पती	जोषी	३	माध्यन्दिनी
९३३.	बसण	वृहस्पती	जोषी	३	"
९३४.	बावुधा	वृहस्पती	जोषी	३	"
९३५.	विठुरिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
९३६.	विजयचारण	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	माध्यन्दिनी
९३७.	व्योहाल	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
९३८.	बबरोलिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
९३९.	विश्वम्भराप्रधान	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
९४०.	बरताड़	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
९४१.	बड़गामिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
९४२.	बड़ीठवाल	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
९४३.	ब्योलिया	गौतम	अग्निहोत्री	३	माध्यन्दिनी
९४४.	बाजरे	गौतम	अग्निहोत्री	३	"
९४५.	व्यास	अत्रिय	जोषी	३	"
९४६.	बलेणिया	अत्रिय	जोषी	३	"
९४७.	बूटोलिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
९४८.	बाकोलिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
९४९.	बबेरवाल	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
९५०.	बिदुरिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
९५१.	विजणेट	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
९५२.	वियाला	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
९५३.	बासोतिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
९५४.	बोघड़	गौतम	अग्निहोत्री	३	माध्यन्दिनी
९५५.	बाड़ीवाल चौधरी	गौतम	अग्निहोत्री	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
९५६.	बुपणवाल	अत्रिय	जोषी	३	माध्यन्दिनी
९५७.	बचुका	अत्री	जोषी	३	कौटिण्य
९५८.	बावुन्या	कृष्णवेण्यम	व्यास	३	वजसनीय
९५९.	बजेचान	कृष्णवेण्यय	व्यास	३	वजसनीय
९६०.	बासोधा	यमदग्नि	तिवारी	३	माध्यन्दिनी
९६१.	बड़ीवाल	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	,,
९६२.	बावल्या	धनञ्जय	तिवारी	३	यजुवंशी
९६३.	बुटोलिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	माध्यन्दिनी
९६४.	बरबाका	बन्थुल	जोषी	३	,,
९६५.	बिसमिला	बलि	जोषी	५	,,
९६६.	बसवेलिया	बन्थुल	जोषी	३	,,
९६७.	बासोतिया	परवृद्ध वशिष्ठ	व्यास	३	,,
९६८.	बोलिया	सावर्णि	मिश्र	३	,,
९६९.	वस्तीलिया	कण्व	व्यास	३	,,
९७०.	बासोन्या	गर्ग	जोषी	३	,,
९७१.	बालधना	गविष्ठर	जोषी	३	,,
९७२.	व्यासोदयाति	यमदग्नि	त्रिपाठी	३	,,
९७३.	बणाया	वरजंगन	जोषी	३	,,
९७४.	बड़ा	वलि	जोषी	५	,,
९७५.	बलाचिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
९७६.	ब्रह्मपुरिया	परवृद्ध वशिष्ठ	व्यास	३	माध्यन्दिनी
९७७.	बावल्या	उपम	जोषी	३	,,
९७८.	बावलिया	मुदगल	मिश्र	३	,,
९७९.	विसम्वराप्रधान	पिप्पलायन	जोषी	३	,,

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
९८०.	बबरवाल	वशिष्ठ	जोषी	३	माध्यन्दिनी
९८१.	भरीडवाल	अंगिरा	जोषी	३	,,
९८२.	भतरो	गर्ग	दीक्षित	३	,,
९८३.	भररोल्या	गर्ग	दीक्षित	३	,,
९८४.	भरमुनिया	धनञ्जय	त्रिवेदी	३	,,
९८५.	भल	भारद्वाज	पांडे	३	,,
९८६.	भलनपरा	मौदगल्य	पुरोहित	३	,,
९८७.	भादोलिया	अत्री	शुक्ल	३	,,
९८८.	भालिका	कौशिक	अग्निहोत्री	३	,,
९८९.	भाड़वाड़	काशकृतस्नु	पुरोहित	३	,,
९९०.	भारा	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	,,
९९१.	भाउका	मौदगल्य	पुरोहित	३	,,
९९२.	भारंगा	वृहस्पती	जोषी	३	,,
९९३.	भादुपोता	शौनक	द्विवेदी	३	,,
९९४.	भारंडवाल	सास्कृत	पांडे	३	,,
९९५.	भिवाल	अत्री	शुक्ल	३	,,
९९६.	भारंडवाल	सास्कृत	व्यास	३	,,
९९७.	भींडवाल	अत्री	शुक्ल	३	,,
९९८.	भिडा	वासुकी	व्यास	३	,,
९९९.	भिंडा	गौतम	अग्निहोत्री	५	,,
१०००.	(भैंडा)	गौतम	अग्निहोत्री	५	,,
१००१.	भीलवाल	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	,,
१००२.	भीतिया	वृहस्पती	जोषी	३	,,
१००३.	भूंवरा	अंगिरा	जोषी	३	,,

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
१००४.	भूंसना	भार्गव	दीक्षित	३	माध्यन्दिनी
१००५.	भोगर	कश्यप	तिवारी	३	"
१००६.	भोगराणप्रधान	पिप्पलायन	जोषी	३	"
१००७.	भक्षु	काश्यप	दीक्षित	३	"
१००८.	भरसडवाल	अंगिर.	जोषी	२	"
१००९.	भबुरा	अंगिरा	जोषी	३	"
१०१०.	भारण्डा	कौशिक	व्यास	३	"
१०११.	भादुबड़	वाक्षिल्य	पुरोहित	३	"
१०१२.	भरवाल्या	अत्रिय	जोषी	३	"
१०१३.	भवारया	अत्रिय	जोषी	३	"
१०१४.	भटला	अत्रिय	जोषी	३	"
१०१५.	भटरीका	मौदगल्य	पुरोहित	३	वाजसनीय
१०१६.	(भठरिखा)	मौदगल्य	पुरोहित	३	"
१०१७.	भाडपाड	काशकृतस्नु	पुरोहित	३	वदवायन
१०१८.	भागउठया	काशकृतस्नु	पुरोहित	३	"
१०१९.	भकल	रेवण	पुरोहित	३	माध्यन्दिनी
१०२०.	भदो	कृष्णवेण्यय	व्यास	३	वाजसनीय
१०२१.	भसपा	रेवण	पुरोहित	३	माध्यन्दिनी
१०२२.	भरत्थोल्या.	गर्ग	जोषी	३	"
१०२३.	भेसलाणी	शांक्रत	जोषी	३	"
१०२४.	भवोवाणी	अष्टावक्र	जोषी	३	"
१०२५.	भगलसाण	धृत कौशिक	शुक्ल	३	"
१०२६.	भाटखोर	जन्हु	व्यास	३	"
१०२७.	भाः भाः	कर्ण	जोषी	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासना (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
१०२८.	भातरा	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी
१०२९.	भिंवाला	भारद्वाज	पांडे	३	"
१०३०.	भरथलिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
१०३१.	भारतीया	भारद्वाज	पांडे	३	"
१०३२.	भैसुरिया	वशिष्ठ	जोषी	३	"
१०३३.	भूंवाला	भारद्वाज	जोषी	३	"
१०३४.	भीडा	भारद्वाज	जोषी	३	"
१०३५.	भव्यावलिया	शांडिल्य	अग्निहोत्री	३	"
१०३६.	(भट्टावलिया)	शांडिल्य	अग्निहोत्री	३	"
१०३७.	भादुपोता	शौनक	जोषी	३	"
१०३८.	भदवालिया	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	"
१०३९.	भडचक्री	भारद्वाज	पांडे	३	"
१०४०.	भादुका	भारद्वाज	पांडे	३	"
१०४१.	भीडा जोषी	मौदगल्य	पुरोहित	३	"
१०४२.	भगरवाल	अत्री	शुक्ल	३	कौथुमी
१०४३.	भतरी	गर्ग	जोषी	३	माध्यन्दिनी
१०४४.	भंरौड	कौशिक	अग्निहोत्री	३	अश्वालायन
१०४५.	भटव्यास	तंत्री	व्यास	३	माध्यन्दिनी
१०४६.	भारा	जैमिनिय	व्यास	३	"
१०४७.	भागरी	वैयाग्रपद्य	व्यास	एक प्रवर	"
१०४८.	भूतिया	वैयाग्रपद्य	व्यास	३	"
१०४९.	भदवाणी	अष्टावक्र	जोषी	३	"
१०५०.	भदवासिया	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	"
१०५१.	भेड़ा	अत्रिय	जोषी	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
१०५२.	भूदोज	कौशिक	अग्निहोत्री	३	अश्वलायन
१०५३.	भंडालवाल	कौशिक	अग्निहोत्री	३	"
१०५४.	भट्टावलिया	शांडिल्य	तिवारी	३	माध्यन्दिनी
१०५५.	भींडा	अत्री	जोषी	३	माध्यन्दिनी
१०५६.	भांगड़ स्वामी	भार्गव	स्वामी	५	"
१०५७.	भंगोरिया	भारद्वाज	जोषी	३	"
१०५८.	माला	अंगिरा	जोषी	३	"
१०५९.	माहोनिया	कविस्त	वाजपेयी	३	"
१०६०.	(मावल्या)	कविस्त	वाजपेयी	३	"
१०६१.	मानौरिया	कौडिन्य	अग्निहोत्री	३	"
१०६२.	मादानी	काशकृतस्नु	पुरोहित	३	वदवायन
१०६३.	माठा	गौतम	अग्निहोत्री	३	माध्यन्दिनी
१०६४.	मांडोल्या	भारद्वाज	पांडे	३	"
१०६५.	मांचोलिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
१०६६.	मारस्या	भारद्वाज	पांडे	३	"
१०६७.	मासालवावाल	मौदगल्य	पुरोहित	३	"
१०६८.	मासोल्या	वरवंगन	जोषी	३	"
१०६९.	मारस्था	विश्वामित्र	व्यास	३	"
१०७०.	महर्षिया	भारद्वाज	व्यास	३	"
१०७१.	मामडोल्या	विश्वामित्र	व्यास	३	"
१०७२.	मागरखोइया	अत्री	शुक्ल	३	"
१०७३.	मोरोलिया	अत्री	शुक्ल	३	"
१०७४.	मुदडत	अधमर्षण	जोषी	३	त्रांदविशाखा
१०७५.	मुछमरोड़ा	कविस्त	वाजपेयी	३	माध्यन्दिनी

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
१०७६.	मुडसैनिया	कश्यप	तिवारी	३	माध्यन्दिनी
१०७७.	मुड़ला	कौशिक	अग्निहोत्री	३	"
१०७८.	मुडजोरिया	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	"
१०७९.	मठिनार	मित्रावरुण	स्वामी	३	"
१०८०.	मूतिया	वैयाग्रपद्य	व्यास	मेकप्रवर	"
१०८१.	मुवारस्वामी	पारासर	मिश्र	३	"
१०८२.	मुडाजरे	भारद्वाज	पांडे	३	"
१०८३.	मांडोलिया	भारद्वाज	जोषी	३	"
१०८४.	मुसरान	भार्गव	दीक्षित	४	"
१०८५.	(मुसरिहा)	भार्गव	दीक्षित	४	"
१०८६.	मुंदोरिया	वत्स	मिश्र	३	"
१०८७.	मेन	कश्यप	तिवारी	३	"
१०८८.	मेलु	विश्वामित्र	व्यास	३	"
१०८९.	मेडवाल	विश्वामित्र	व्यास	३	"
१०९०.	मोसवाल	काशकृतस्नु	पुरोहित	३	वदवायन
१०९१.	मोरीया	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	माध्यन्दिनी
१०९२.	मोटाल्या	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	"
१०९३.	मोमनिया	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	"
१०९४.	मोदवाल	धनञ्जय	त्रिवेदी	३	"
१०९५.	मुहरेनिया	सांकृत	दीक्षित	३	"
१०९६.	मांडोठिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
१०९७.	महता	भारद्वाज	पांडे	३	"
१०९८.	मामडोलिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
१०९९.	मंजीठवाल	वत्स	मिश्र	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
११००.	मरहटा	वत्स	मिश्र	३	माध्यन्दिनी
११०१.	मंडावरिया	वत्स	मिश्र	३	"
११०२.	महतपा	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	"
११०३.	मिरचिया	अंगिरा	व्यास	३	"
११०४.	मन्दोरिया	सुपर्ण	व्यास	३	"
११०५.	मैनवाल	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	"
११०६.	मठानिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
११०७.	मुदहट	यमदग्नि	श्रोत्रिय	३	"
११०८.	मोनस	शांडिल्य	जोषी	३	"
११०९.	मंगोलिया	वत्स	मिश्र	३	"
१११०.	मुहरेनिया	सांस्कृत	पांडे	३	"
११११.	मुगानीया	कौशिक	जोषी	३	"
१११२.	मरत्रु	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	"
१११३.	मोडिवावत	कण्व	व्यास	३	"
१११४.	मोकचुम्बा	पारासर	मिश्र	३	"
१११५.	मोपल	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
१११६.	मालामक्षु	अंगिरा	जोषी	३	"
१११७.	मुडला	अंगिरा	जोषी	३	"
१११८.	मस्तिया	वलि	जोषी	३	"
१११९.	मोकटी	वलि	जोषी	३	"
११२०.	मुलताना	वलि	जोषी	३	"
११२१.	मेसलाणी	शांकृत	जोषी	३	"
११२२.	मूर्तिया	आलम्वायन	जोषी	३	"
११२३.	मलढकोट	वलि	जोषी	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
११२४.	मारवाल	अत्रिय	जोषी	३	माध्यन्दिनी
११२५.	मासोलबावाल	मौदगल्य	पुरोहित	३	वाजसनीय
११२६.	मोमाण्या	शक्ति	जोषी	३	माध्यन्दिनी
११२७.	मूंड	कृष्णवेण्यय	व्यास	३	वाजसनीय
११२८.	मोडवाल	पूर्वातिथिनाम	त्रिपाठी	३	श्रीभ्रीति
११२९.	मोडविवत	बन्थुल	जोषी	३	माध्यन्दिनी
११३०.	मोरव	वाशिष्ठ	तिवारी	३	"
११३१.	मोटा	वाशिष्ठ	व्यास	३	"
११३२.	मारजाण	उपम	जोषी	३	"
११३३.	मोक	विष्णु	व्यास	३	"
११३४.	मोटा	कौडिल्य	जोषी	३	"
११३५.	मामलोर	शोदी	पुरोहित	३	"
११३६.	ममईवाल	गविष्ठर	जोषी	३	"
११३७.	मामलोडया	धृतकौशिक	शुक्ल	३	"
११३८.	मणिहार	मित्रावरुण	स्वामी	३	"
११३९.	मनचकी	काश्यप	तिवारी	३	"
११४०.	मारोलिया	अत्रिय	जोषी	३	"
११४१.	मगलोरिया	अत्रिय	जोषी	३	"
११४२.	मोटेका तुसाणिय	अत्रिय	जोषी	३	"
११४३.	मोगरा	अत्रिय	जोषी	३	"
११४४.	मागस	अत्रिय	जोषी	३	"
११४५.	मंडोलिया	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	"
११४६.	मता	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
११४७.	मुहालेवाल	गौतम	अग्निहोत्री	३	माध्यन्दिनी

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
११४८.	मोटा	अत्रिय	जोषी	३	माध्यन्दिनी
११४९.	मन्डोलिया	अत्रिय	शुक्ल	३	"
११५०.	महर्षि	अगस्त	दीक्षित	३	"
११५१.	म्वाणिया	अगस्त	दीक्षित	३	"
११५२.	मंगलोरिया	कौशिक	अग्निहोत्री	३	अश्वलायन
११५३.	मठवाल	कौशिक	अग्निहोत्री	३	"
११५४.	महरवाल	कौशिक	अग्निहोत्री	३	"
११५५.	मलु	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी
११५६.	मोतिया मुइका	हारी	व्यास	३	"
११५७.	(मुइका)	हारी	व्यास	३	"
११५८.	माटोल्या	अव्य	व्यास	३	"
११५९.	मंडोरिया	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	"
११६०.	मार्जनी	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
११६१.	मारस्या	भारद्वाज	भावन (शास्त्री)	३	माध्यन्दिनी
११६२.	मन्दोरमा	भृगु	व्यास	३	"
११६३.	मरवानिया	भारद्वाज	जोषी	३	"
११६४.	रदवाजा	अव्य	व्यास	३	"
११६५.	रोडिवाल	वरवंगन	जोषी	३	"
११६६.	रस्सीवाल	कश्यप	तिवारी	३	"
११६७.	रजमोरिया	गौतम	अग्निहोत्री	३	"
११६८.	रहुतिया	भार्गव	दीक्षित	३	"
११६९.	रांडौलिया	कौडिन्य	जोषी	३	"
११७०.	राजोरिया	गौतम	जोषी	३	"
११७१.	(राजोर्या)	गौतम	जोषी	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
११७२.	रामपुरिया	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी
११७३.	राणोल्या	वृहस्पती	जोषी	३	,,
११७४.	रूखवाल	कौडिन्य	जोषी	३	,,
११७५.	रूणेजा	भार्गव	दीक्षित	३	,,
११७६.	रैवाडिया	भारद्वाज	पांडे	३	,,
११७७.	रोनीजा	अत्री	जोषी	३	कौटिन्य
११७८.	राधावत	संरवना	जोषी	३	माध्यन्दिनी
११७९.	रामहदिया	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	,,
११८०.	रामायणिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
११८१.	रामे	अत्री	शुक्ल	३	,,
११८२.	रेवलिया	कृष्णवेण्यय	व्यास	३	वजसनीय
११८३.	रामपरिया	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी
११८४.	राईवाल	भारद्वाज	पांडे	३	,,
११८५.	रोलिवाल	भारद्वाज	पांडे	३	,,
११८६.	रतेलवाल	यमदग्नि	श्रोत्रिय	५	,,
११८७.	राम्ड़्या	मौदगल्य	पुरोहित	३	,,
११८८.	रामगढ़िया	परासर	मिश्र	३	,,
११८९.	रूलवाल	शांडिल्य	अग्निहोत्री	३	,,
११९०.	रावलमा	अत्रिय	जोषी	३	,,
११९१.	रतेलवाल	भारद्वाज	जोषी	३	,,
११९२.	रहथला	भारद्वाज	पांडे	३	,,
११९३.	रामे प्रधान	भृगु	व्यास	३	,,
११९४.	रामा	शोरी	पुरोहित	३	,,
११९५.	रामपुरियामित्र	राहु	जोषी	३	,,

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
११९६.	राधिका वशिष्ठ	जावाली	आचार्य	३	माध्यन्दिनी
११९७.	राजिन्दा	मार्कंडेय	जोषी	२	शोरिनां
११९८.	रोलवाल	वाक्षिल्य	पुरोहित	३	माध्यन्दिनी
११९९.	रावरया	लोमाक्ष	जोषी	२	माध्यन्दिनी
१२००.	रतिवाल	अत्रिय	जोषी	३	,,
१२०१.	रोहितिया	अत्रिय	जोषी	३	,,
१२०२.	लोकण्डा	परासर	मिश्र	३	,,
१२०३.	लोडया	जावाली	आचार्य	३	,,
१२०४.	लोहण्या	वात्सनां	जोषी	३	,,
१२०५.	लखाणा	अंगिरा	जोषी	३	,,
१२०६.	लिदण्या	वत्स	मिश्र	३	,,
१२०७.	लाटा	जातुकर्ण्य	जोषी	३	,,
१२०८.	लापस्यामोर	जातुकर्ण्य	जोषी	३	,,
१२०९.	लुंडेरिया	वत्स	मिश्र	३	,,
१२१०.	लाल	कृष्णवेण्यय	व्यास	३	,,
१२११.	लादण्या	कृष्णवेण्यय	व्यास	३	,,
१२१२.	लुणिवाल	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
१२१३.	लाटा	अगस्त	दीक्षित	३	माध्यन्दिनी
१२१४.	लाम्बा	भारद्वाज	पांडे	३	,,
१२१५.	लाल चौव्या	भारद्वाज	चौबे	३	,,
१२१६.	सिन्दड	सावर्ण	जोषी	३	,,
१२१७.	शलकिया	गर्ग	दीक्षित	३	,,
१२१८.	शुमरोडिया	गौतम	अग्निहोत्री	३	,,
१२१९.	सरमोर	भारद्वाज	पांडे	३	,,

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
१२२०.	संकटतोड़	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी
१२२१.	सहजचौकीवाल	भारद्वाज	पांडे	३	"
१२२२.	समधा	मोदगल्य	पुरोहित	३	"
१२२३.	सरसालिया	वाशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
१२२४.	(सरसोल्या)	वाशिष्ठ	शुक्ल	३	"
१२२५.	सावदो	वृहस्पती	जोषी	३	माध्यन्दिनी
१२२६.	सरसोल्या	शांडिल्य	अग्निहोत्री	३	"
१२२७.	संचोरिया	शौनक	द्विवेदी	३	"
१२२८.	सरवला	गौतम	अग्निहोत्री	३	"
१२२९.	समदरवाल	काशकृतस्नु	पुरोहित	३	वदवायन
१२३०.	सपोज	काशकृतस्नु	पुरोहित	३	"
१२३१.	सकलवाल	अंगिरा	जोषी	३	माध्यन्दिनी
१२३२.	सकर्सिया	कविस्त	वाजपेयी	३	"
१२३३.	सारोल्या	कश्यप	तिवारी	३	"
१२३४.	साकटा	कश्यप	तिवारी	३	"
१२३५.	सारसीवाल	कौंडिन्य	अग्निहोत्री	२	"
१२३६.	सासदा	काशकृतस्नु	पुरोहित	३	वदवायन
१२३७.	साड़ोल्या	गौतम	अग्निहोत्री	३	माध्यन्दिनी
१२३८.	सांजानेरिया	धनञ्जय	त्रिवेदी	३	"
१२३९.	साड़ोलिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
१२४०.	सुरचान्या	भार्गव	दीक्षित	३	"
१२४१.	सामेर	भारद्वाज	पांडे	३	"
१२४२.	सान	मौदगल्य	पुरोहित	३	"
१२४३.	सांगानेरिया	वत्स	मिश्र	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
१२४४.	सातुखरा	वृहस्पती	जोषी	३	माध्यन्दिनी
१२४५.	सागवान	शांडिल्य	अग्निहोत्री	३	कौथुमी
१२४६.	सिड़ोल्या	अंगिरा	जोषी	३	माध्यन्दिनी
१२४७.	सिरोइया	कश्यप	तिवारी	३	माध्यन्दिनी
१२४८.	सिकरवाल	कौंडिन्य	अग्निहोत्री	३	"
१२४९.	सीवर	भार्गव	दीक्षित	३	"
१२५०.	शुभका	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	"
१२५१.	सुड़वाल	कौशिक	अग्निहोत्री	३	"
१२५२.	सुपोज	गौतम	अग्निहोत्री	३	"
१२५३.	सुरभटवाल	धनञ्जय	त्रिवेदी	३	"
१२५४.	सुरोल्या }	भारद्वाज	जोषी	३	"
१२५५.	संगेला }	भारद्वाज	जोषी	३	"
१२५६.	सुरोलिया }	भारद्वाज	जोषी	३	"
१२५७.	सुरोल्या	कौशिक	व्यास	३	"
१२५८.	सुभटा:	विश्वामित्र	व्यास	३	"
१२५९.	सुस्वान्या	सांकृत	पांडे	३	"
१२६०.	सेयल	कश्यप	तिवारी	३	"
१२६१.	सेलुपरया	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	"
१२६२.	सोपल्या	अत्री	शुक्ल	३	"
१२६३.	सोनाइया	कौंडिन्य	अग्निहोत्री	३	"
१२६४.	सोनवाल	भारद्वाज	पांडे	३	"
१२६५.	सिरोल्या	कश्यप	तिवारी	३	"
१२६६.	(सुरोल्या)	कश्यप	तिवारी	३	"
१२६७.	शुक्लपुरिया	अगस्त	जोषी	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
१२६८.	शाठिया	गौतम	अग्निहोत्री	३	माध्यन्दिनी
१२६९.	सरभला	गौतम	अग्निहोत्री	३	"
१२७०.	सुकेतिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
१२७१.	सुरोलिया	वशिष्ठ	जोषी	३	"
१२७२.	सारल्या	सांकृत	व्यास	३	"
१२७३.	समधा	अनाब्रह्माक्ष	शुक्ल	३	"
१२७४.	सिम्मनवाल	गौतम	पांडे	३	"
१२७५.	सुरीपिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
१२७६.	सोंधानिया	भार्गव	दीक्षित	३	"
१२७७.	सोंकरवाल	शौनक	द्विवेदी	३	"
१२७८.	संधीवाल	सांकृत	जोषी	३	"
१२७९.	सीवर	भार्गव	जोषी	३	"
१२८०.	सीदर	मार्कण्डेय	जोषी	३	"
१२८१.	सकलवाल	अंगिरा	जोषी	३	"
१२८२.	सावडा	काश्यप	जोषी	३	"
१२८३.	सीडीवाल	कश्यप	जोषी	३	"
१२८४.	सिवरीवाल	कश्यप	जोषी	३	"
१२८५.	श्रसी	भारद्वाज	पांडे	३	"
१२८६.	सीरमोर	भारद्वाज	पांडे	३	"
१२८७.	(सरमोर)	भारद्वाज	जोषी	३	"
१२८८.	सिवलोडया	वाक्षिल्य	पुरोहित	३	"
१२८९.	सिडोल्या	अंगिरा	जोषी	३	"
१२९०.	सडवाल	कौशिक	व्यास	३	"
१२९१.	समदीवाल	कौशिक	व्यास	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
१२९२.	सुपरिवाण	कौशिक	व्यास	३	माध्यन्दिनी
१२९३.	सीगलवाल	वाक्षिल्य	पुरोहित	३	"
१२९४.	सीगावत	वलि	जोषी	३	"
१२९५.	सीगीवात	शांडिल्य	जोषी	३	"
१२९६.	साई	अत्रिय	जोषी	३	"
१२९७.	सोपल्या	अत्रिय	जोषी	३	"
१२९८.	साणा	मौदगल्य	पुरोहित	३	"
१२९९.	साकेटाणा	हारी	व्यास	३	"
१३००.	साखोलिया	कौशिक	व्यास	३	"
१३०१.	सिडोलिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
१३०२.	सहल	भारद्वाज	पांडे	३	"
१३०३.	सातोरिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
१३०४.	सुरोलिया	भारद्वाज	दुबे	३	"
१३०५.	सीभला	भारद्वाज	जोषी	३	"
१३०६.	सीलोठिया	भारद्वाज	जोषी	३	"
१३०७.	सावलोदिया	भारद्वाज	जोषी	३	"
१३०८.	सांकलश	भारद्वाज	पांडे	३	"
१३०९.	संपलवाल	भारद्वाज	पांडे	३	"
१३१०.	शिवाहया	भारद्वाज	पांडे	३	"
१३११.	सागवाल	भारद्वाज	जोषी	३	"
१३१२.	सिरसोलिया	भारद्वाज	जोषी	३	"
१३१३.	सर्पदमा	भारद्वाज	पांडे	३	"
१३१४.	शाणौलिया	भारद्वाज	जोषी	३	"
१३१५.	सोरठया	भारद्वाज	जोषी	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
१३१६.	सिन्दोलिया	भारद्वाज	जोषी	३	माध्यन्दिनी
१३१७.	सिकारा	वत्स	मिश्र	३	,,
१३१८.	सूंधडत	परासर	मिश्र	३	,,
१३१९.	सोजतमा	शांडिल्य	जोषी	३	,,
१३२०.	सालवाल	हरित	व्यास	३	,,
१३२१.	सांभरिया	हरित	व्यास	३	,,
१३२२.	सुनपातिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुली
१३२३.	श्रीवाल	अत्री	जोषी	३	कौटिन्य
१३२४.	संडाकया	कृष्णवेण्यय	व्यास	३	वाजसनीय
१३२५.	सिगल	पूर्वातिथिनाम	त्रिपाठी	३	श्रीभ्रीति
१३२६.	सिरोडिवाल	पूर्वातिथिनाम	त्रिपाठी	३	श्रीभ्रीति
१३२७.	श्रीमिति	पूर्वातिथिनाम	त्रिपाठी	३	,,
१३२८.	सवचवा	मालवनां	जोषी	३	माध्यन्दिनी
१३२९.	सिरोडिवाल	रेवण	पुरोहित	३	,,
१३३०.	सिरकोल्या	बन्थुल	जोषी	३	,,
१३३१.	सुरनावल्या	वाशिष्ठ	तिवारी	३	,,
१३३२.	सिसवान्या	बन्थुल	जोषी	३	,,
१३३३.	सारधूमा	सावर्णि	मिश्र	३	,,
१३३४.	सरोपट	अगस्त	जोषी	३	,,
१३३५.	सलेवाल	सावर्ण	जोषी	३	,,
१३३६.	सुरसोल्या	शांडिल्य	जोषी	३	,,
१३३७.	सुपरोटा	सोमराज	जोषी	३	,,
१३३८.	सुरपडा	सोमराज	जोषी	३	,,
१३३९.	सरवरिया	चन्द्रायन	जोषी	३	,,

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
१३४०.	सेठो	तंत्री	व्यास	३	माध्यन्दिनी
१३४१.	सारसोल्या	वाशिष्ठ	तिवारी	३	,,
१३४२.	सिद्धी	मौदगल्य	देवशर्मा	३	,,
१३४३.	सिधिचारणा	लोभाक्ष	जोषी	२	,,
१३४४.	सरकसेटो	तंत्री	व्यास	३	,,
१३४५.	सोरथिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
१३४६.	सुठया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	,,
१३४७.	सिम्मनवाल	गौतम	अग्निहोत्री	३	माध्यन्दिनी
१३४८.	सिरसौनिया	अत्रिय	जोषी	३	,,
१३४९.	सर्पदसा	अत्रिय	जोषी	३	,,
१३५०.	सांखोलिया	अत्रिय	जोषी	३	,,
१३५१.	सिरोहीवाल	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	,,
१३५२.	सर्पदमा	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	,,
१३५३.	सफीदमीवाल	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	,,
१३५४.	सिवाल	वशिष्ठ	जोषी	३	,,
१३५५.	सुरिलिया	वशिष्ठ	जोषी	३	,,
१३५६.	शिवपुरिया	वशिष्ठ	जोषी	३	,,
१३५७.	सोरिया	वशिष्ठ	जोषी	३	,,
१३५८.	सिलाणिया	वशिष्ठ	जोषी	३	,,
१३५९.	सिमावत	वशिष्ठ	जोषी	३	,,
१३६०.	सिरसोणिया	अत्री	शुक्ल	३	कौथुमी
१३६१.	सागवाल	अत्री	शुक्ल	३	,,
१३६२.	साखोलिया	अत्री	शुक्ल	३	,,
१३६३.	सालोडिया	कृष्णवेण्यय	व्यास	३	वजसनीय

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
१३६४.	सिहवाल	कौशिक	व्यास	३	माध्यन्दिनी
१३६५.	स्याणिया	कौशिक	व्यास	३	"
१३६६.	सिरोहीवाल	कौशिक	व्यास	३	"
१३६७.	सेदुखेर	मांडन्य	जोषी	३	माध्यन्दिनी
१३६८.	सीरापट	शौनक	जोषी	३	"
१३६९.	सोपल्या	अनाब्रह्माक्ष	शुक्ल	३	"
१३७०.	संचोरया	शौनक	जोषी	३	"
१३७१.	सकरा	कोचन	व्यास	३	"
१३७२.	सेलुपरया	जैमिनिय	व्यास	३	"
१३७३.	सारट	वैयाग्रपद्य	व्यास	३	"
१३७४.	सिवाल	वैयाग्रपद्य	व्यास	३	"
१३७५.	सादावत	वलि	जोषी	३	"
१३७६.	सुपरीवाण	कौशिक	व्यास	३	"
१३७७.	सुरसोला	गविष्ठर	जोषी	३	"
१३७८.	सुरवान्या	सांस्कृत	व्यास	३	"
१३७९.	सुरचान्या	भार्गव	जोषी	३	"
१३८०.	सूडवाल	अनाब्रह्माक्ष	शुक्ल	३	"
१३८१.	सुरोलिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	कौथुमी
१३८२.	सिवाल	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
१३८३.	सोरिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
१३८४.	सिलाणिया	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
१३८५.	सिमावत	वशिष्ठ	शुक्ल	३	"
१३८६.	शिमल्या	भारद्वाज	चौबे	३	माध्यन्दिनी
१३८७.	हरितवाल	भारद्वाज	पांडे	३	"

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शासन (अल्ल)	ऋषि गोत्र	पदवी	प्रवर सं.	शाखा
१३८८.	(हातीवाल)	भारद्वाज	पांडे	३	माध्यन्दिनी
१३८९.	हारोल्या	कौशिक	अग्निहोत्री	३	अश्वलायन
१३९०.	हारोल्या	कौशिक	व्यास	३	माध्यन्दिनी
१३९१.	हरसान्या	अत्री	शुक्ल	३	कौटिन्य
१३९२.	हरदान्या	कौंडिन्य	व्यास	३	माध्यन्दिनी
१३९३.	हरवाणी	वामदेव	जोषी	३	"
१३९४.	हयग्रीवा	वामदेव	जोषी	३	"
१३९५.	हिकलारा	मौदगल्य	पुरोहित	३	"
१३९६.	हदया	जैमिनि	श्रोत्रिय	३	"
१३९७.	हिदावत	कौशिक	अग्निहोत्री	३	अश्वलायन
१३९८.	होरिया	पूर्वांतिथनाम	त्रिपाठी	३	श्रीश्रीति
१३९९.	हरहरी	शांडिल्य	जोषी	३	कौथुमी
१४००.	हलकारा	मौदगल्य	पुरोहित	३	माध्यन्दिनी
१४०१.	हूपटयाण	कणवायन	जोषी	५	"
१४०२.	हलकीया	दरमायन	व्यास	५	"
१४०३.	हिसारिया	परासर	मिश्र	३	"
१४०४.	हलदोलिया	परवृद्ध वशिष्ठ	जोषी	३	"
१४०५.	हरितवाल	शांडिल्य	अग्निहोत्री	३	कौथुमी
१४०६.	हीहरवाल	कौशिक	व्यास	३	माध्यन्दिनी
१४०७.	हयवाहेती	अगस्त	दीक्षित	३	"
१४०८.	हल्देनिया	भारद्वाज	पांडे	३	"
१४०९.	हरितवाल	शांडिल्य	जोषी	३	"
१४१०.	हुकमन	भारद्वाज	जोषी	३	"

Scanned with CamScanner

गौत्र विषयक शंका

प्राय: लोग शंका किया करते हैं कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शुद्रों तथा वर्ण शंकरों तक के एक ही गोत्र क्यों होते हैं? इस विषय का भी अग्निपुराण में स्पष्ट प्रमाण मिलता है।

कोई कहते हैं कि गोत्र केवल ब्राह्मणों का होता है, अन्य वर्ण का नहीं। प्रमाण श्लोक–

क्षत्रिय वैश्य शूद्राणांगोत्रं च प्रवरादिकम्।
तथान्य वर्णसङ्कराणां येषा विप्राश्च याजका॥

(अग्निपुराण)

अर्थात्–क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और वर्ण संकरों के गोत्र और प्रवर उनके गुरु या पुरोहित के ही होते हैं, स्वतंत्र नहीं। संदर्भ–अल्ल गोत्र प्रवर पत्रावली, से प्रस्तुत। पृष्ठ–१३ से।

तिवाड़ियों का भेद

चुलीवाल–तिवाड़ी, तायगा–तिवाड़ी, घुड़चढ़िया–तिवाड़ी, भद्या–तिवाड़ी, परसरिया–तिवाड़ी, फलौड़िया–तिवाड़ी, भटावला–तिवाड़ी, रोडी–तिवाड़ी, कोरक–तिवाड़ी, बहरोडिया–तिवाड़ी।

छन्याति

स्व. महाराजा जयसिंह जी ने ब्राह्मणों में परस्पर खान–पान का भेद समाप्त करने के लिये ब्राह्मणों की एक महासभा आयोजित की, जिसमें १. पारीख, २. सारस्वत, ३. गौड़, ४. गुर्जर गौड़, ५. सिखवाल और ६. दाहिमा इन छ: का कच्चा–पक्का भोजन एक किया गया था। तब से छहों ब्राह्मण कच्ची–पक्की में सम्मिलित होते रहे हैं, किन्तु बेटी सम्बन्ध अपने–अपने समाज में करते हैं। इन्हें राजस्थान में छन्याति ब्राह्मण कहा जाता है।

गोविन्दलाल गौड़
संकलनकर्ता

Scanned with CamScanner

गौड़ ब्राह्मणों की ऋषि गोत्रानुसार पदवियाँ जो गोत्रावली के अन्तर्गत लिखित हैं

१. अत्री-अत्रिय–शुक्ल जोषी। २. अंगिरा–जोषी, व्यास। ३. अगस्त–जोषी, दीक्षित। ४. आलवायन–जोषी। ५. अघमर्षण–जोषी। ६. अनाब्रह्माक्ष–शुक्ल। ७. अष्टावक्र–जोषी। ८. अव्य–व्यास। ९. उत्तम–जोषी। १०. उद्दालक–पालक। ११. उपम–जोषी। १२. उपमन्यु–जोषी। १३. कविस्त–वाजपेयी। १४. कश्यप–तिवारी, त्रिपाठी। १५. काश्यप–जोषी, दीक्षित। १६. काशकृतस्नु–पुरोहित। १७. कौशिक–अग्निहोत्री, व्यास, दीक्षित। १८. कांचन–व्यास। १९. काणवायन–जोषी। २०. केशव–जोषी। २१. कौन्डिन्य–अग्निहोत्री। २२. कपिल–जोषी। २३. कात्यायन–त्रिपाठी, जोषी। २४. कृष्णावेण्यन–व्यास। २५. कण्व–व्यास। २६. कर्ण–जोषी। २७. गौतम–अग्निहोत्री, तिवारी। २८. गर्ग–दीक्षित, जोषी। २९. गोलव–शुक्ल। ३०. गोभिल–जोषी। ३१. गविष्ठ–जोषी। ३२. च्यवन–पुरोहित। ३३. चद्रायन–जोषी। ३४. जैमिनि–श्रोत्रिय। ३५. जमदग्नि–श्रात्रिय। ३६. जन्हु–व्यास। ३७. जावाली–आचार्य। ३८. जैमिनिय–व्यास। ३९. तंत्री–व्यास। ४०. दरभायन–व्यास। ४१. दालम्य–जोषी। ४२. धृतकौशिक–शुक्ल। ४३. धनंजय–त्रिवेदी, दीक्षित। ४४. परवृद्ध वशिष्ठ–जोषी, शुक्ल, व्यास। ४५. पूर्वातिथिनाम–त्रिपाठी, तिवारी। ४६. पारासर–मिश्र, स्वामी। ४७. वशिष्ठ–शुक्ल, जोषी, उपाध्याय, व्यास। ४८. वाशिष्ठ–शुक्ल, जोषी, तिवारी। ४९. वात्सना–जोषी। ५०. वाक्षिल्य–पुरोहित। ५१. वृहस्पती–जोषी। ५२. वत्स–मिश्र। ५३. बलि–जोषी। ५४. विश्वामित्र–जोषी, व्यास। ५५. व्योंग–आचार्य। ५६. वासुकी–व्यास। ५७. वृद्धि–व्यास। ५८. वामदेव–जोषी। ५९. विष्णु–व्यास। ६०. बोधायन–व्यास। ६१. वरवंगन–जोषी। ६२. बन्धुल–जोषी। ६३. वैयाग्रपद्य–व्यास। ६४. भार्गव–दीक्षित, जोषी, स्वामी। ६५. भारद्वाज–

Scanned with CamScanner

पांडे, तिवारी, चौबे, चतुर्वेदी, जोषी, दूबे, मिश्र। ६६. **भृगु**–व्यास। ६७. **मौदगल्य (मुदगल)**–पुरोहित, देवशर्मा, मिश्र। ६८. **मालवना**–जोषी। ६९. **मौनस**–स्वामी। ७०. **मांडल**–जोषी। ७१. **मित्रावरुण**–स्वामी। ७२. **मार्कन्डेय**–जोषी। ७३. **रेवण**–पुरोहित। ७४. **राहु**–जोषी। ७५. **लोभाक्ष**–जोषी। ७६. **शान्डिल्य**–अग्निहोत्री, जोषी, तिवारी। ७७. **सांस्कृत**–व्यास, पांडे। ७८. **सांकृत**–जोषी, व्यास, पांडे, दीक्षित। ७९. **शांकृत**–जोषी। ८०. **शौनक**–जोषी, द्विवेदी, व्यास। ८१. **सोमराज**–जोषी। ८२. **सार्वण**–जोषी। ८३. **सावर्णि**–जोषी। ८४. **शोरी**–पुरोहित। ८५. **संखना**–जोषी। ८६. **शक्ति**–जोषी। ८७. **सुपर्ण**–व्यास। ८८. **सोपायन**–मिश्र। ८९. **श्रोसेश्वर**–जोषी। ९०. **हरितस**–जोषी, व्यास, मिश्र। ९१. **हारी–व्यास।**

उपर्युक्त ऋषि गोत्र की पदवियों के अतिरिक्त भी ब्राह्मणों की अन्य पदवियाँ हो सकती है अर्थात् पदवियों का निर्धारण वेद-शास्त्रों के अध्ययन एवं कर्म काण्ड, ज्योतिष, पठन-पाठन, पुरोहितादि कार्य एवं श्रेष्ठ विद्वानों को राजा-महाराजा द्वारा प्रदत्त उपाधियों के अनुसार तथा स्थान और व्यवसाय के आधार पर बन जाती है।

अध्ययन से स्पष्ट हुआ है कि अनेक ऋषि गोत्र वालों के अन्तर्गत, शासन धारकों की पदवी भिन्न-भिन्न वर्णित है। विवाह सम्बन्धों में ऋषि गोत्र और शासन का विचार प्रमुख्य है।

वर्तमान में ऋषि गोत्रानुसार पदवी के स्थान पर सभी ब्राह्मण 'शर्मा' पदवी का व्यवहार करते हैं। विशेषतः गौड़ ब्राह्मण अपने नाम के साथ शर्मा और गौड़ दोनों पदवी लगाते हैं। आज शैक्षणिक योग्यतानुसार शास्त्री, ज्योतिषाचार्य, साहित्यरत्न, विशारद आदि पदवियाँ भी लगाने की प्रथा है।

–गोविन्दलाल गौड़
संकलनकर्त्ता

Scanned with CamScanner

ऋषि गोत्रानुसार–सूत्र, वेदादि का विवरण

(अगले पृष्ठों पर)

वेदों की १६ शाखाओं के पश्चात् और सूक्ष्म व सरल करने के लिये, चारों वेदों के भिन्न-भिन्न सूत्र पृथक-पृथक ऋषियों द्वारा बनाये गये। जैसे–यजुर्वेद का कात्यायन द्वारा, सामवेद का गोभिल द्वारा, ऋग्वेद का आश्वासयन द्वारा और अर्थववेद का कौशिक द्वारा। इसके अतिरिक्त भी कुछेक ऋषियों ने अपनी-अपनी शाखाओं के सूत्र की रचना की। इस प्रकार सूक्ष्मतम कर्मकांड ग्रन्थों का नाम 'सूत्र' रखा गया।

अध्ययन से स्पष्ट हुआ है कि–एक ही ऋषि के भिन्न-भिन्न सूत्र भी ग्रन्थों में लिखित है, तदानुसार ही इस गोत्रावली में वर्णन किया गया है।

इसके साथ ही एक ही वेद के सूत्रों में भिन्नता भी दृष्टिगत हुई है, जिसे यथावत लिखा गया है।

इसी प्रकार ऋषि गोत्रों की कुल देवी और गणपति में भी भिन्नताएँ हैं।

ग्रन्थों के अध्ययन से जो ज्ञात हुआ है, उसी के अनुसार प्रस्तुत विवरण में लिखा गया है।

कृपया पाठक ध्यान से पढ़े और अपने सूत्रादि की जानकारी प्राप्त कर लाभ उठावें।

प्राय: विवाहादि संस्कार में पंडित जी कुलदेवी एवं गणपति का नाम पूछते हैं, जिसकी जानकारी सबको नहीं होती। मेरा प्रयास ब्राह्मण बन्धुओं के लिये उपयोगी रहा तो मुझे प्रसन्नता होगी।

–गोविन्दलाल गौड़
संकलनकर्त्ता

Scanned with CamScanner

ऋषि गोत्रानुसार सूत्रादि की सूची

क्र.सं.	ऋषि गोत्र	सूत्र	वेद	कुल देवी	गणपति
१.	अत्री	गोभलीय	यजुर्वेद	रूचि देवी	दैदीप्यनाम्
२.	अत्री	अत्र्यायगृह्य	"	रूचि देवी	दैदीप्यनाम्
३.	अत्रिय	कात्यायन	यजुर्वेद	सती देवी	मुययेनाम्
४.	अंगिरा	कात्यायन	"	जीण देवी	महाकर्ण
५.	अंगिरा	वृद्धगोतम	"	जीण देवी	महाकर्ण
६.	अघमर्षण	कात्यायन	"	कार्श्यणा	त्रिष्टधिनां
७.	अगस्त	जैमिनि	"	सभा देवी	अन्नादयनाम्
८.	अष्टावक्र	गौतम	"	मंगला देवी	षडमुखनाम्
९.	आलम्बायन	अलम्बायन	"	सती देवी	धूंडीनाम्
१०.	अनाव्रह्माक्ष	गोतम	"	गणी देवी	अनवडनाम्
११.	उपमन्यु	पारस्कर	"	नदिया देवी	कीर्तिनाम्
१२.	अघमर्णण	जमदग्नि	"	कार्श्यणा	त्रिष्टधिनाम्
१३.	उपमन्यु	च्यवन	"	नदियादेवी	कीर्तिनाम्
१४.	उपम	वासुकी	"	कालीदेवी	गजानन
१५.	उद्दालक	पारस्कर	"	कालीदेवी	गजानन
१६.	कश्यप	पारस्कर	"	चावण्डा	गोलनाम्
१७.	काश्यप	कात्यायन	"	पथयारी	महार्णनाम्
१८.	कविस्त	पारस्कर	"	पथयारी	महार्णनाम्
१९.	कात्यायन	पारस्कर	"	चामुण्डा	गणनाम्

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	ऋषि गोत्र	सूत्र	वेद	कुल देवी	गणपति
२०.	कौंडिन्य	पारस्कर	यजुर्वेद	जीण देवी	धीरानाम्
२१.	कौंडिन्य	कौडिन्य	"	जीण देवी	धारीनाम्
२२.	कौशिक	आश्वलायन	ऋग्वेद	समदीरी	मुखनाम्
२३.	कौशिक	अत्रयावरीज	यजुर्वेद	समदीरी	मुखनाम्
२४.	कौशिक	कृष्णाजिनय	यजुर्वेद	सतिया देवी	खेचरनाम्
२५.	कपिल	गोभलीय	सामदेव	नादिया देवी	कोलवनां
२६.	कपिल	कात्यायन	यजुर्वेद	नादिया देवी	कोलवनां
२७.	काशकृतस्नु	पारस्कर	"	सिधि देवी	मुदरायणां
२८.	काशकृतस्नु	गोतम	"	सिधि देवी	मुदरायणां
२९.	कृष्णवेण्यय	कात्यायन	"	नन्दीनि देवी	गहायनां
३०.	कशव	कात्यायन	यजुर्वेद	आकुतीना	देवनां
३१.	कर्ण	कात्यायन	"	कुण्या	गणपनां
३२.	कांचन	देवल	"	चामुण्डा	मंगलनाम्
३३.	काणवायन	भगीरा	"	सती देवी	सिधिनाम्
३४.	गर्ग	गोभलीय	अथर्ववेद	कांकक्षीया	धोलिनां
३५.	गौतम	पारस्कर	यजुर्वेद	कृष्णा देवी	अद्धिनां
३६.	गोतम	वद्धगौतम	"	कृष्णा देवी	ऋद्धिनां
३७.	गविष्ठर	वासुकी	"	चामुण्डा	गजानन
३८.	गोमिल	कात्यायन	"	काली देवी	धरधरनां
३९.	गोलव	वद्धगौतम	"	चावडा	गजकर्ण
४०.	चन्द्रायन	जैमिनिय	"	जीण देवी	धुन्डनां
४१.	जातुकर्ण्य	पारस्कर	"	चाणा देवी	विनायक
४२.	जैमिनि	पारस्कर	"	हेमाद्री	गजानन
४३.	जगदग्नि	जमदग्नि	"	चामुंडा	कविल

क्र.सं.	ऋषि गोत्र	सूत्र	वेद	कुल देवी	गणपति
४४.	जन्हु	जमदग्नि	यजुर्वेद	सखी देवी	विध्ननाश
४५.	जावाली	वार्हस्पत्य	"	सती देवी	शिवनाम्
४६.	तंत्री	वद्ध गोतम	"	सीतला	गजानन
४७.	दरभायण	वासुदेव	"	चन्दावती	धरनां
४८.	दालभ्य	भार्गव	"	याकुदी	शिवनां
४९.	धृतकौशिक	वद्ध कौशिक	"	कटारी देवी	शुभनां
५०.	धनञ्जय	गोभलीय	सामदेव	कुणीचरी	सुभटनां
५१.	पारासर	पारस्कर	यजुर्वेद	जयंती देवी	शुभनां
५२.	वाशिष्ठ	पारस्कर	सामवेद	अत्यवती	धीरनां
५३.	वशिष्ठ	वसिष्ठ	यजुर्वेद	सत्यवती	त्र्यंकनां
५४.	वत्स	पारस्कर	"	चामुण्डा	एकदंतनाम्
५५.	वरवंगन	पारस्कर	"	सती देवी	गजानन
५६.	वामदेव	पारस्कर	"	कल्याणी	कौंडननाम्
५७.	विश्वामित्र	गोभिल	सामवेद	वागी देवी	धूनीनाम्
५८.	वृहस्पती	पारस्कर	यजुर्वेद	अरूंधती	सहायकानाम्
५९.	वाक्षिय	संखत्यी	"	गजिया देवी	षडमुखनां
६०.	बलि	देवल	"	कपिला देवी	वर देवनां
६१.	वृहस्पती	भारद्वाज	"	अरूंधती	सहायकानाम्
६२.	बन्धुल	देवल	"	दलियाणी	अहिरवुधनां
६३.	विष्णु	वृद्ध विष्णु	यजर्वेद	सवरी	सिनां
६४.	वात्सनां	भार्गव	"	चामुण्डा	एकदन्तनां
६५.	वोधायन	गोतम	"	सती देवी	शिवनां
६६.	वरवंगन	कात्यायन	"	सती देवी	गजानन
६७.	वृद्धि	वार्हस्पत्य	"	सेवंती	शिवनां

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	ऋषि गोत्र	सूत्र	वेद	कुल देवी	गणपति
६८.	वैयाग्रपद्य	सांकृत	यजुर्वेद	सितला	व्यानीनां
६९.	वासुकी	कित्यायन	"	चामुंडा	गंनांगणपति
७०.	भारद्वाज	पारस्कर	यजुर्वेद	सहदेवी	गजानन
७१.	भार्गव	पारस्कर	"	सति देवी	कृतान्तेनां
७२.	भारद्वाज	भरद्वाज	"	सहदेवी	गजानन
७३.	भार्गव	भार्गव	"	सति देवी	कृतांतनां
७४.	मौदगल्य	पारस्कर	"	सति देवी	ऋषिणाम्
७५.	मोगिल	कात्यायन	यजुर्वेद	बरदी	ऋषिणाम्
७६.	मालवंना	कृक्त्णु	"	रंभानां	सिद्धिनाम्
७७.	मांडल्य	कात्यायन	"	गोपाली	नंदनां
७८.	मित्रावरुण	भार्गव	"	कम्बा	षडमुखनां
७९.	मौनस	कोशिक	"	चामुंण्डा	विकटोटनां
८०.	मुद्गल	जमदग्नि		सति देवी	गजानन
८१.	मार्कंडेय	देवल	"	कुणमा	गजानन
८२.	यमदग्नि	पारस्कर	यजुर्वेद	चामुण्डा	कपिलनां
८३.	रेवण	गोतम	"	कृष्णा देवी	गंगाधरनां
८४.	राहु	वृद्ध विष्णु	"	सिधिया	गनानां
८५.	लोभाक्ष	कात्यायन	"	सति देवी	गंनांम्
८६.	शांडिल्य	गोभलीय	सामवेद	नरवारिया	श्रीगणपति
८७.	शौनक	पारस्कर	यजुर्वेद	सति देवी	गजानन
८८.	सांस्कृत	"	"	जिण देवी	श्रीजनानां
८९.	सोपायन	"	"	शीला देवी	गजानन
९०.	शांडिल्य	देवल	"	नरवारिया	श्रीगणपति
९१.	सावर्णि	शोनक	"	धारनां देवी	धरिनां

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	ऋषि गोत्र	सूत्र	वेद	कुल देवी	गणपति
९२.	शांक्रत	शांकत	यजुर्वेद	सरू देवी	नन्दीनां
९३.	संखनां	शोनक	"	सुरा देवी	भुवनां
९४.	शोरी	कोकिल	"	चावंडा	शुभनां
९५.	सोमराज	वार्हस्पत्य	"	सति देवी	गजानन
९६.	सावर्ण	शोनन्द	"	माता देवी	गणेशनां
९७.	सांकृत्य	अत्रि	"	जिणयदेवी	श्रीगननां
९८.	शौनन्द	शोनक	"	सति देवी	गजानन
९९.	शुनक	शोनक	"	संखया	नन्दीनां
१००.	सोपायन	जमदग्नि	"	शीला देवी	गजानन
१०१.	हारी	वशिष्ठ	यजुर्वेद	जिण देवी	गोलवनां

विशेषत :—उपर्युक्त सूची पढ़ने से ज्ञात हुआ होगा कि कुछेक ऋषियों के नाम पर एक से अधिक (२-३) सूत्र लिखित हैं।

अतः ग्रन्थों में ऐसी भिन्नता पायी गयी है, तदानुसार वर्णन किया गया है। उसे काट-छाट करना उचित प्रतीत नहीं हुआ। विज्ञजन स्वयं विचार करेंगे। मेरा कार्य संकलन करना है, सुधार करने में मैं न सक्षम हूँ, न अधिकारी। शास्त्र-पुराणों में भिन्नता स्वाभाविक है।

—गोविन्दलाल गौड़
संकलनकर्त्ता

Scanned with CamScanner

गौड़ ब्राह्मणों के प्रकार

ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड के पृष्ठ ५ के अनुसार :-१. गौड़ २. सारस्वत ३. कान्यकुब्ज ४. उत्कल और ५. मैथिल यह पाँचों गौड़ ब्राह्मण के अन्तर्गत आते हैं अर्थात् पंच गौड़ कहलाते हैं।

इसके अतिरिक्त १२ गौड़ों का नाम :-१. मांडल (मालवी) गौड़, २. श्रीगौड़, ३. श्रीहर्षगौड़ (गंगापुत्र गौड़), ४. हर्याणागौड़, ५. वाल्मीकी गौड़, ६. वाशिष्ठ गौड़, ७. सौरभ गौड़, ८. दालम्य गौड़, ९. सुखसेन गौड़, १०. भट्टनागर गौड़, ११. सूर्यध्वज गौड़, १२. माथुर गौड़। उक्त पंच गौड़ों को जोड़ने से कुल १७ प्रकार के गौड़ होते हैं।

अर्थात् जो केवल 'गौड़' ब्राह्मण के नाम से प्रसिद्ध है, उन्हें ही गौड़ के पूर्व 'आदि' विशेषण लगाकर आदि गौड़ ब्राह्मण कहना सर्वदा शास्त्र सम्मत है, ताकि उक्त १७ प्रकार के गौड़ ब्राह्मणों में स्पष्ट पृथकता का बोध हो जाए। केवल गौड़ ब्राह्मण कहने में प्रश्न बनता है कि आप कौन से गौड़ ब्राह्मण हैं।

अतएव केवल गौड़ ब्राह्मण कहने से और आदि गौड़ ब्राह्मण कहने के कारण गौड़ और आदि गौड़ में भेद मान लिया जाना स्वाभाविक है, किन्तु गलत है। पूर्व पृष्ठों पर इसका निराकरण कर दिया गया है।

सच तो यह है कि राजस्थान में शेखावाटी, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, उत्तरांचल प्रदेश में विशेष रूप से लोग आदि गौड़ ब्राह्मण ही बताते हैं।

अत: जब कोई पूछे आप कौन वर्ण (जाति) के हैं, तो कहना चाहिये ब्राह्मण, फिर पूछे आप कौन ब्राह्मण हैं, तो कहना चाहिये गौड़ ब्राह्मण, इसके

Scanned with CamScanner

पश्चात् जब पूछा जाए कि आप कौन से गौड़ हैं तब कहना चाहिये, आदि गौड़ ब्राह्मण। प्रथम प्रश्न के उत्तर में आदि गौड़ ब्राह्मण कहना ठीक नहीं है। यह उत्तर तृतीय प्रश्न का बनता है।

जब कोई अपने को गौड़ ब्राह्मण बतावे तो स्वत: बोध हो जाना चाहिये कि ये आदि गौड़ ब्राह्मण हैं, क्योंकि अन्य १२ प्रकार के गौड़, अपने को केवल गौड़ ब्राह्मण न कहकर, कहते हैं, श्रीगौड़, सौरभ गौड़, दालम्य गौड़, हर्याणा गौड़ इत्यादि।

अत: कोई गौड़ ब्राह्मण बतावे तो स्वत: आदि गौड़ ब्राह्मण का बोध हो जाता है। इसमें खींचा-तानी करना अनभिज्ञता का कारण हो जाता है।

सभी विप्र बन्धुओं से निवेदन है कि शास्त्र की मर्यादा का पालन करते हुए, भेद या रूढ़ि के बन्धन को तोड़ कर, शास्त्र के निर्णय का अनुकरण करें और ब्राह्मण संगठन को सशक्त बनावें।

आज के युग में परस्पर पूर्व से चली आ रही रूढ़ि एवं द्वेष को भूलाकर, समान विचारधारा वाले विप्र समुदाय का सशक्तिकरण किया जाए।

आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक प्रकार के ब्राह्मणों का एक अखिल भारतीय महासंघ स्थापित किया जाए। आज की राजनीति में जातियता का बोलबाला है, सरकार भी प्रत्येक जाति की संख्या बल पर प्राथमिकता देती है। लोग बोलते हैं कि सब ब्राह्मण बन रहे हैं, बनने दें। किसी समाज की संख्या का बढ़ना शुभ है। नाम से क्या होता है, सम्बन्ध तो सब अपने-अपने समाज में करते हैं। संकुचित विचार को छोड़कर, उदारवादी बनना है। ऐसा मेरा विचार है।

–गोविन्दलाल गौड़
संकलनकर्ता

Scanned with CamScanner

ब्राह्मणों के शुभाशुभ लक्षण

१. 'ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्ड' के अनुसार ब्राह्मण लक्षण :–

एक सत्यब्रह्म, एक तप ब्रह्म, एक इन्द्रियजय ब्रह्म, एक सर्वभूतदया ब्रह्म, यह चार गुण जिनमें हो उन्हें पूर्ण ब्राह्मण मानना।

शूद्र होके शील गुण सम्पन्न होवे तो वह ब्राह्मण को मान्य है और ब्राह्मण स्वकर्म भ्रष्ट हो तो वह शूद्र से भी अधम होता है।

सब वर्ण (जाति) में ब्राह्मण और सब जाति में चांडाल है। ब्राह्मणों में भी कर्म योग से चांडाल है, और चांडालों में भी कर्म योग से ब्राह्मण है।

'मनुस्मृति' १/८८ के अनुसार ब्राह्मण लक्षण–(१) निष्कपट होके प्रीति से पुरुष, पुरुषों को और स्त्री, स्त्रियों को पढ़ावे। (२) पूर्ण विद्या पढ़े (३) अग्नि होत्रादि यज्ञ करे। (४) यज्ञ करावे। (५) विद्या तथा सुवर्ण का सुपात्रों को दान देवे। (६) न्याय से धन उपार्जन करने वाले गृहस्थों से दान लेवे भी।

२. 'श्री आदि गौड़ प्रदीपिका' के पृष्ठ ७०-७१ के अनुसार :–

(१) देव ब्राह्मण, (२) मुनि ब्राह्मण, (३) द्विज ब्राह्मण, (४) क्षत्रिय ब्राह्मण, (५) वैश्य ब्राह्मण, (६) शूद्र ब्राह्मण, (७) मार्जार ब्राह्मण, (८) कृतघ्न ब्राह्मण, (९) म्लेच्छ ब्राह्मण, (१०) चांडाल ब्राह्मण, ऐसे दस प्रकार के ब्राह्मण कहे जाते हैं।

इन दस ब्राह्मणों के कर्म एवं लक्षण :–भिक्षा माँग कर निर्वाह करना, वेद पढ़ना, जो मिले उसी में संतोष करना, वेद शास्त्र का ज्ञाता, सत्यभाषी

Scanned with CamScanner

को देव ब्राह्मण कहना। तप कर्ता, अहिंसक, दयालु, नित्य षट्कर्मी, त्रिकाल संध्या करने वाले को द्विज ब्राह्मण कहना। जो घोड़ा-हाथी, रथादि पर कुशल वाहन कर्ता, युद्ध में तत्पर, राजनीतिज्ञ, न्यायकारी को क्षत्रिय ब्राह्मण कहना। जो द्रव्य का ब्याज लेता हो, पशुपालक, कृषक, व्यापार करने वाले, उद्यमी को वैश्य ब्राह्मण कहना। तेल, लाख, तील, नील, क्षार, शहदादि विक्रेता को शूद्र ब्राह्मण कहना। चोरी करने वाले, निर्दयी, दंभी, धोखा देने वाले को मार्जार ब्राह्मण कहना। किसी का उपकार न मानना, चरित्रहीन को कृतघ्न ब्राह्मण कहना। अपवित्र रहना, स्नानादि कर्महीन, भक्षाभक्ष करने वाले, मादक पदार्थ का सेवन करने वाले को म्लेच्छ ब्राह्मण कहना। स्वभाव से क्रूर, लोभी, हिंसक, धार्मिक स्थानों का दुरुपयोग करने वाले को चांडाल ब्राह्मण कहना।

३. ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड के पृष्ठ-१२ के अनुसार–

जो जातिमात्र ब्राह्मण है, जिसके गर्भाधानादि संस्कार समंत्रक नहीं हुए, उनको अब्राह्मण कहना। शातापत ऋषि छः प्रकार के अब्राह्मण कहते हैं–१. राजसेवक, २. क्रयविक्रय कर्ता, ३. द्रव्यलोभ से बहुत यज्ञ कराने वाला, ४. सारे गाँव का आचार्यत्व करने वाला और उसका सेवक, ५. प्रातः सायं संध्या न करने वाला यह छः अब्राह्मण है। अब जो सशस्त्र नौकरी कर्ता-१, शाई बेचने वाला-२, अष्टादश वर्णोपवर्ण का आचार्यत्व करने वाला-३, तीन वर्ष तक द्रव्य लेकर देव पूजा करने वाला-४, ग्रामांतरों का पत्रादि वाहक (धावक)-५, द्रव्य लेकर रसोई करने वाला पाचक (रसोइया) यह ६ शूद्र सरीखे ब्राह्मण जानना।

ऐसे शुभाशुभ कर्म के अनुसार ब्राह्मणों को शास्त्रों में परिभाषित किया

Scanned with CamScanner

गया है। अपने पूर्वजों की मर्यादा का पालन करना चाहिए, केवल ब्राह्मण कहने से कोई ब्राह्मण नहीं होता। ब्राह्मण जाति नहीं, वर्ण है और वर्ण का निर्धारण, चयन प्रक्रिया से होना चाहिये। चयन प्रक्रिया का नष्ट होना ही ब्राह्मण पतन का कारण है। आज ब्राह्मणेत्तर जातियाँ ब्राह्मण नामधारियों का विरोध कर रही है, ब्राह्मणों का नहीं। शास्त्रानुसार कोई जन्म से ब्राह्मण नहीं होता। जैसाकि शास्त्रों में वर्णन किया गया है। आज भ्रष्ट ब्राह्मण भी एक-दूसरे की निन्दा करके गौरवान्वित हो रहे हैं। यह विचारनीय विषय है। सावधान हो और आत्मचिन्तन करें।

–गोविन्दलाल गौड़
संकलनकर्ता

Scanned with CamScanner

चार वेद और उनके उपवेदों के नाम

	वेद	रचनाकार	उपवेद
१.	यजुर्वेद	वायु ऋषि	धनुर्वेद
२.	ऋग्वेद	अग्नि ऋषि	आयुर्वेद
३.	सामवेद	आदित्य ऋषि	गान्धर्व वेद
४.	अथर्व वेद	अंगिरा ऋषि	स्थापत्य वेद (अर्थशास्त्र)

छः शास्त्र एवं उनके रचनाकार

१.	न्याय दर्शन	गौतम ऋषि द्वारा
२.	वैशेषिक दर्शन	कणाद मुनि द्वारा
३.	सांख्य दर्शन	कपिल ऋषि द्वारा
४.	योग दर्शन	पातञ्जलि ऋषि द्वारा
५.	मीमांसा शास्त्र	जैमिनि ऋषि द्वारा
६.	वेदान्त शास्त्र	व्यास मुनि द्वारा

१. न्याय दर्शन का प्रमाण वाद

१. प्रमाण, २. प्रमेय, ३. संशय, ४. प्रयोजन, ५. सिद्धान्त, ६. दृष्टान्त, ७. अवयव, ८. तर्क, ९. निर्णय, १०. वाद, ११. जल्प, १२. वितंडा, १३. हेत्वाभास, १४. छल, १५. जाति और १६. निग्रहस्थान।

Scanned with CamScanner

२. वैशेषिक दर्शन के अनुसार

प्रमेय :–१. द्रव्य, २. गुण, ३. कर्म, ४. सामान्य, ५. विशेष, ६. सम्बाय, कुल छः भागों में विभक्त किया गया।

द्रव्य पदार्थ :–१. पृथ्वी, २. जल, ३. तेज, ४. वायु, ५. आकाश, ६. काल, ७. दिशा, ८. मन, ९. आत्मा या जीव आत्मा।

२४ प्रकार के गुण :–१. रूप, २. रस, ३. गन्ध, ४. स्पर्श, ५. संख्या, ६. परिमान, ७. पृथकत्व, ८. संयोग, ९. विभाग, १०. प्रत्व, ११. बुद्धि, १२. अप्रत्य, १३. सुख, १४. दुःख, १५. इच्छा, १६. द्वेष, १७. प्रयत्न, १८. गुरुत्व, १९. द्रवत्व, २०. स्नेह, २१. संस्कार, २२. धर्म, २३. अधर्म औः २४. शब्द।

पाँच प्रकार के कर्म :–१. उन्क्षेपण, २. अवक्षेपण, ३. आकुंचन, ४. प्रसारण और ५. गमन।

३. सांख्य दर्शन का विचार

संसार में दो पदार्थ हैं, एक जड़, दूसरा चेतन (प्रकृति–पुरुष), चेतन जीवात्मा को चेतन और अचेतन का ज्ञान आवश्यक है। जगत का उपादान कारण प्रकृति है, परन्तु प्रकृति जड़ और दुःखदायक है, दुःख से निवृत्त होने के लिये चेतन सत्ता अर्थात् सृष्टि कर्ता परमात्मा को जानना एवं स्थित होना तथा आत्म–साक्षात्कार होना परमावश्यक है।

४. योग दर्शन के अनुसार साधना विधि

१. यम, २. नियम, ३. आसन, ४. प्राणायाम, ५. प्रत्याहार, ६. धारणा, ७. ध्यान, ८. समाधि। इसका ज्ञान गुरु से प्राप्त होगा।

Scanned with CamScanner

५. मीमांसा शास्त्र सिद्धान्त

योग (ध्यान) में अविद्या के संस्कार बाधक होते हैं, मन पर पड़े संस्कार को दूर करने हेतु शुभ कर्मों में प्रवृत्त रहना एवं सदैव संसार की प्रत्येक वस्तु में ईश्वर का रूप और सत्ता का अनुभव करना चाहिये। अतएव सद्गुरु की शरण एकमात्र मुक्ति का मार्ग है।

६. वेदान्त शास्त्र के द्वारा मार्गदर्शन

पूर्व पाँचों शास्त्रों द्वारा–प्रमाण, प्रभेय, प्रकृति–पुरुष, योग की विधि, योग (ध्यान) में विघ्न निवारण की चर्चा तो हो गई, किन्तु जिस चेतन ब्रह्म के साथ स्थित होता है, उन्हें तो जाना ही नहीं, इसलिये वेदान्त शास्त्र में सम्पूर्ण ब्रह्म ज्ञान एवं ब्रह्म के यथार्थ रूप का वर्णन किया गया है।

वेद–शास्त्र का यथार्थ ज्ञान के लिये, उनका अध्ययन करना आवश्यक है, इस लेख में संक्षेप में परिचय देने का प्रयास किया गया है।

शास्त्रज्ञ न होने के कारण इसमें असंगति एवं त्रुटि का होना स्वाभाविक है, विज्ञ विप्र बन्धु क्षमा करेंगे।

–गोविन्दलाल गौड़
संकलनकर्ता

Scanned with CamScanner

अन्तिम निवेदन

प्रकाशित गोत्रावली में गोत्र-शासन सम्बन्धित जो भी संकलन किया गया है, उसमें यथा संभव प्रमाणित ग्रन्थों के अध्ययन से प्राप्त जानकारी पर आधारित है, साथ ही श्रेष्ठ विद्वानों से सम्पर्क करके मार्गदर्शन लेते हुए, संदेहात्मक विषय वस्तु का परित्याग कर, पुष्ट जानकारी प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

अनेक ब्राह्मणेत्तर वर्णों में शासन (अल्ल) ब्राह्मणों से मिलते-जुलते हैं, इसलिये पूरी जानकारी प्राप्त होने पर ही पुस्तक में प्रविष्ठी की गई है।

शासनों का निर्धारण पाँच हजार वर्ष पूर्व में किया गया था, हजारों वर्षों के अन्तराल में मूल शासन का उच्चारण दोष के कारण अनेक पर्याय बन गया है और स्थान परिवर्तन एवं व्यवसाय से भी भूल बस शासन बदल गया है।

यद्यपि सावधानीपूर्वक असंगति का निवारण करने का प्रयास किया गया है, तदापि पूर्व की सभी असंगति को शुद्ध करना संभव नहीं है। अगर गौड़ ब्राह्मणों की महासभा का आयोजन हो और सभी विद्वानों के द्वारा शोध किया जाए तो सुधार हो सकता है।

अनभिज्ञता बस मुझ से या मुद्रक दोष के कारण हुई भूल एवं अशुद्धि के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।

पुनश्च :-

प्रस्तुत गोत्रावली में जो वर्ण सम्बन्धित विचार व्यक्त किया गया है, वह शास्त्रों पर आधारित है और मैं उसका सम्मान करता हूँ। पूर्व महर्षियों ने जो वर्ण की व्यवस्था दी है, वह आज के युग में भी अनुकरणीय है। इस व्यवस्था के अभाव में विप्र समुदाय कहाँ जा रहा है? यह चिन्तन का विषय है। संभव है, यह व्यवस्था आज व्यवहारिक और रुचिकर न हो। व्यक्तिगत रूप से मैं इसे महत्त्वपूर्ण मानता हूँ।

विनीत

गोविन्दलाल गौड़

Scanned with CamScanner

बिखरे मोती

१. बन्धे को बन्धा मिले, छूटे कौन उपाय।
सेवा कर निर्बन्ध की, पल में दे छुड़ाय॥

२. नाम बड़ा किस काम का, जो किसी के काम न आए।
सागर से नदियाँ भली, जो सबकी प्यास बुझाए॥

३. मान पुड़ी है जहर की, खाये सो मर जाये।
चाह उसी की राखता, वह भी अति दुःख पाये॥

४. साधक ऐसा चाहिए, जाके ज्ञान विवेक।
बाहर मिलता सो मिले, अन्दर सबसे एक॥

५. चलती चक्की देख के दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय॥

६. चक्की चले तो चलन दे, तू काहे को रोय।
लगा रहे तू कील से, तो बाल न बाँका होय॥

७. यह तन विष की बेलरी गुरु अमृत की खान।
सिर दीजे सद्गुरु मिले तो भी सस्ता जान॥

८. कबीरा इह जग आय के, बहुत से कीने मीत।
जिन दिल बाँधा एक से, वे सोये निश्चिंत॥

९. हर्ष शोक जाँके नहीं वैरी मीत समान।
कह नानक सुन रे मना मुक्त ताँही ते जान॥

१०. माटी कहे कुम्हार से तू क्या रोंदे मोय।
एक दिन ऐसा आयेगा मैं रोंदूँगी तोय॥

११. हम वासी उस देश के जहाँ पार ब्रह्म का खेल।
दीया जले अगम का बिन बाती बिन तेल॥

Scanned with CamScanner

१२. मन की आँटी अटपटी, झटपट लखे न कोय।
मन की खटपट जो मिटे, चटपट दर्शन होय॥

१३. यदि मन मैला हो प्रिय!, सब ही मैला होय।
तन धोये से मन कभी, साफ-स्वच्छ न होय॥

१४. मन का दर्पण स्वच्छ किया, जिसने अपने तांई।
अनुभव उसका देखी उसमें, आत्मदेव की सांई॥
भीतर बाहर दिखे अकेला, न कहीं दूसरा कोई।
कार्य सिद्ध हुए उसके तो 'सामी' कहेसुन सांई॥

१५. दुर्जन की करुणा बुरी, भलो सांई को त्रास।
सूरज जब गरमी करे, तब बरसन की आस॥

१६. कस्तूरी कुंडल बसे, मृग ढूंढ़े बन माहिं।
ऐसे घट-घट ब्रह्म हैं, दुनिया जानत नाहिं॥

१७. सब घट मेरा साँईयाँ, खाली घट न कोई।
बलिहारी वा घट की, जा घट प्रकट होई।
कबीरा कुँआ एक है, पनिहारी अनेक।
न्यारे-न्यारे बर्तनों में, पानी एक का एक॥

१८. भूले मन समझ के लाद लदनियाँ।
थोड़ा लाद बहुत मत लादे, टूट जाय तेरी गरदनियाँ॥
भूखा होय तो भोजन कर ले, आगे हाट न बनियाँ॥
प्यासा होय तो पानी पी ले, आगे देश निपनियाँ॥
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो काल के हाथ कमनियाँ॥

१९. तेरे भावे कछु करो, भलो बुरा संसार।
'नारायण' तू बैठिके, अपनो भवन बुहार॥

२०. 'कबीर' सुधा है कूकरी, तन सों दई लगाय।
यांको टुकड़ा डालकर, पीछे हरि गुणगाय॥

Scanned with CamScanner

स्तुत्य समर्पण

१. गौड़ विप्र पञ्चाङ्ग गोत्रावली के समापन पर मैं, सृष्टि रचियता परम पिता परमेश्वर को अनन्त कोटि प्रणाम करता हूँ, जिनकी अहेतुक कृपा से मेरा मनुष्य योनि में जन्म हुआ है और मेरे हृदय में विराजमान होकर, मुझे जीवन प्रदान कर रहे हैं।

२. श्रद्धास्पद परम पूज्य श्री सद्गुरु महाराज जी के चरणों में नत मस्तक होकर प्रणाम करता हूँ, जिनके ज्ञान दीक्षा से चराचर जगत में सर्व व्यापक सत्ता को स्वयं में और सब (जड़-चेतन) में अनुभव करने की प्रेरणा प्रदान की गयी है। अर्थात्

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल।
लाली देखन मैं गया, मैं भी हो गया लाल॥

–कबीर

पूज्य महाराज जी के वचन–जो तुम्हें दिखायी पड़ रहा है और जो देख रहा है, उसके साथ तादात्म्य हो जा, भटकना बन्द कर। ऐसे महान ज्ञान के लिए कोटि धन्यवाद तथा शरणागत।

३. ब्रह्मलीन परम पूज्य माता-पिता, जिनके पार्थिव अंश से मेरा शरीर निर्मित हुआ है एवं जिनके रक्त-दुग्ध से पोषण हुआ है तथा जिनकी स्नेह-छाया में पले, बड़े और भौतिक सुख-सम्पदा का आनन्द प्राप्त है। अतः अदृश्य पूज्य माता-पिता के चरणों में अनन्त कोटि नमन करता हूँ।

४. अन्त में मैं, उन सभी श्रेष्ठ जनों, मार्गदर्शकों एवं मित्रों का आभार और सम्मान व्यक्त करता हूँ और धन्यवाद देता हूँ, जिनकी प्रेरणा से मैं उत्साहित होकर 'गोत्रावली' का संकलन करने में सफल हुआ हूँ।

–गोविन्दलाल गौड़
संकलनकर्त्ता

Scanned with CamScanner

गौड़ विप्र पञ्चाङ्ग गोत्रावली

॥ परम ब्रह्म गुरुदेवाये नमः ॥

संकलनकर्त्ता–गोविन्दलाल गौड़

जन्म विक्रम सं. १९८७

(राजकीय एवं राष्ट्रीय पुरस्कृत)

निवास :

''गौड़ विप्र विहार''

२७६०, पूर्वियों का चौक, खजाने वालों का रास्ता, जयपुर (राजस्थान)

राजस्थान विप्र भवन

५१, विष्णु मन्दिर मार्ग, गया (बिहार)

Scanned with CamScanner

राजस्थानी लोक बालाएँ

मुद्रक : दिनेश प्रिन्टर्स, फोन : 3093065

Scanned with CamScanner